चन्दामामा
जून १९९५
Rs
5

अपने प्यारे चहेते के लिए जो हो दूर सुदूर
है न यहाँ अनोखा उपहार जो होगा प्यार भरपूर

चन्दामामा

प्यारी-प्यारी सी चंदामामा दीजिए उसे उसकी अपनी पसंद की भाषा में—
आसामी, बंगला, अंग्रेजी, गुजराती, हिन्दी, कन्नड
मलयालम, मराठी, उड़िया, संस्कृत, तमिल या तेलुगु
—और घर से अलग कहीं दूर रहे उसे लूटने दीजिए घर की मौज-मस्ती

चन्दे की दरें (वार्षिक)

आस्ट्रेलिया, जापान, मलेशिया और श्रीलंका के लिए

समुद्री जहाज़ से रु. 117.00 वायु सेवा से रु. 264.00

फ्रान्स, सिंगापुर, यू.के., यू.एस.ए.,
पश्चिम जर्मनी और दूसरे देशों के लिए

समुद्री जहाज़ से रु. 123.00 वायु सेवा से रु. 264.00

अपने चन्दे की रकम डिमांड ड्रॉफ्ट या मनी ऑर्डर द्वारा
'चन्दामामा पब्लिकेशन्स' के नाम से निम्न पते पर भेजिए:

सर्क्युलेशन मैनेजर, चन्दामामा पब्लिकेशन्स, चन्दामामा बिल्डिंग्स, वडपल[illegible], मद्रास-६०० ०२६.

जीवन में भरदो रंग
डायमण्ड कॉमिक्स के संग
पुस्तकें - एक सर्वश्रेष्ठ उपहार
डायमण्ड कामिक्स प्रस्तुति
बिल्लू गिफ्ट बॉक्स
डायमण्ड कामिक्स प्रस्तुति
चाचा चौधरी गिफ्ट बॉक्स
डायमण्ड कामिक्स प्रस्तुति
पिंकी गिफ्ट बॉक्स
डायमण्ड कामिक्स प्रस्तुति
फैण्टम गिफ्ट बॉक्स
अपने मित्रों के जन्मदिन पर उपहार दें।
डायमण्ड कामिक्स प्रस्तुति
अमर चित्रकथा गिफ्ट बॉक्स
भारत में सर्वाधिक बिकने वाले कॉमिक्स
डायमण्ड कॉमिक्स
डायमण्ड कॉमिक्स प्रा. लि. X-30, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया, फेज-2, नई दिल्ली-110020

चन्दामामा

जून १९९५

एक प्रति : ५.००

वार्षिक चन्दा : ६०.००

PolioPlus

IMMUNIZATION AN ASSURANCE OF GOOD HEALTH TO CHILDREN

VACCINATIONS When and How Many

Age to Start Vaccination	Name of Vaccine	Name of Disease	How Many Times
Birth	BCG	Tuberculosis	Once
6 weeks	Polio	Polio	Three times with intervals of at least one month
6 weeks	DPT	Diphtheria Pertussis (Whooping Cough) Tetanus	Three times with intervals of at least one month
9 months	Measles	Measles	Once

Babies should receive all vaccinations by the time they are twelve months old.

Pregnant women should get themselves vaccinated against Tetanus (TT) twice—in an interval of at least one month—during the later stages of pregnancy.

HEALTHY CHILD—NATION'S HOPE & PRIDE

Design courtesy : World Health Organisation

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'

संचालक : नागिरेड्डी

शिक्षा एक दृष्टिकोण

राजवंश तथा साधारण परिवारों के बालक, आश्रमों में रहकर शुद्ध व आदर्श जीवन बितानेवाले गुरुओं के पास विद्या प्राप्त करने भेजे जाते थे। ये गुरुकुल अधिकतर अरण्यों के बीच हुआ करते थे। तत्संबंधी विशद विवरण हमें शिशुओं के साहित्य में और कहानियों में उपलब्ध होते हैं। उस काल में ना ही कोई निश्चित पाठ्यक्रम होता था, ना ही सुनी बातों को नोट-बुकों में दर्ज करना पड़ता था। बच्चे अपना संपूर्ण समय अपने गुरु के साथ व्यतीत करते थे। आश्रम की स्वच्छता को बनाये रखने का भार उन्हीं पर होता था। आश्रम में रहनेवाले जंतुओं की देखभाल भी वे ही करते थे। गुरु, शिष्यों को अपने अनुभवों का सार बताते थे। वे बताते थे कि उन्होंने अपने जीवन-काल में क्या देखा, क्या सुना, क्या अनुभव किया आदि। वे शिष्यों का मार्ग-दर्शन मात्र करते थे। गुरु ही निर्णय लेते थे कि शिष्यों को कब तक आश्रम में रहना होगा और कब घर लौटना होगा। परंतु अब गुरुओं, शिष्यों तथा आश्रमों की बातें बहुत ही पुराने काल की बात रह गयी है।

उस समय से लेकर अब तक गुरुकुलों की शिक्षा-पद्धति की प्रशंसा होती आयी है। किन्तु आधुनिक आवश्यकताओं की पूर्ति इस शिक्षा-पद्धति से संभव नहीं। इसलिए इसके पुनरुथ्यान का प्रश्न ही नहीं उठता। जहाँ पाठशालाओं के अपने मकान ना हों, वहाँ शायद यह संभव हो। कस्बों और नगरों में जिस प्रकार पाठशालाएँ सक्रम तथा सुव्यवस्थित रूप से चलायी जा रही हैं, उसी प्रकार शिक्षाधिकारी भी इन पिछड़े गाँवों में ऐसी पाठशालाओं की व्यवस्था करना चाहते हैं। इसलिए उन्होंने एक महत्वाकांक्षी योजना का प्रारंभ किया, जिसका नाम है 'आपरेशन ब्लाक बोर्ड'। संक्षेप में इस योजना का लक्ष्य है, हर गाँव में छोटी-सी पाठशाला हो, जिसमें दो तीन दर्जे मात्र चलाये जाएँ, कम से कम दो अध्यापक नियुक्त हों, हर दर्जे में एक (ब्लाक बोर्ड) हो, श्याम पट, पीने का पानी, शौचघर और एक छोटा-सा पुस्तकालय हो।

इस दिशा में बहुत-सा धन खर्च हुआ, विविध सुविधाओं के लिए निधियों का विनिधान हुआ। फिर भी बहुत बड़ी रकम सुव्यवस्थित योजना के अभाव में जैसी की तैसी पड़ी हुई है। जिस वजह से तथाकथित पाठशालाएँ पेड़ों के नीचे ही चल रही हैं। वर्तमान शिक्षा- प्रणालियों के आयोजकों का अभिप्राय है कि शिक्षा को चार दीवारों अथवा श्याम पट के चार कोनों तक ही सीमित रखना नहीं चाहिये। गुरुकुल की शिक्षा -प्रणाली का वे समर्थन कर रहे हैं। किन्तु क्या भारत में ऐसे गाँव भी हैं, जो औद्योगिक विस्तरण या नगर की सीमा-व्याप्ति के अंतर्गत आ नहीं गये हों।

वर्ष : ४८ | जून १९९५ | अंक : १०

एक प्रति : रु. ५/- | वार्षिक चन्दा : रु ६०/-
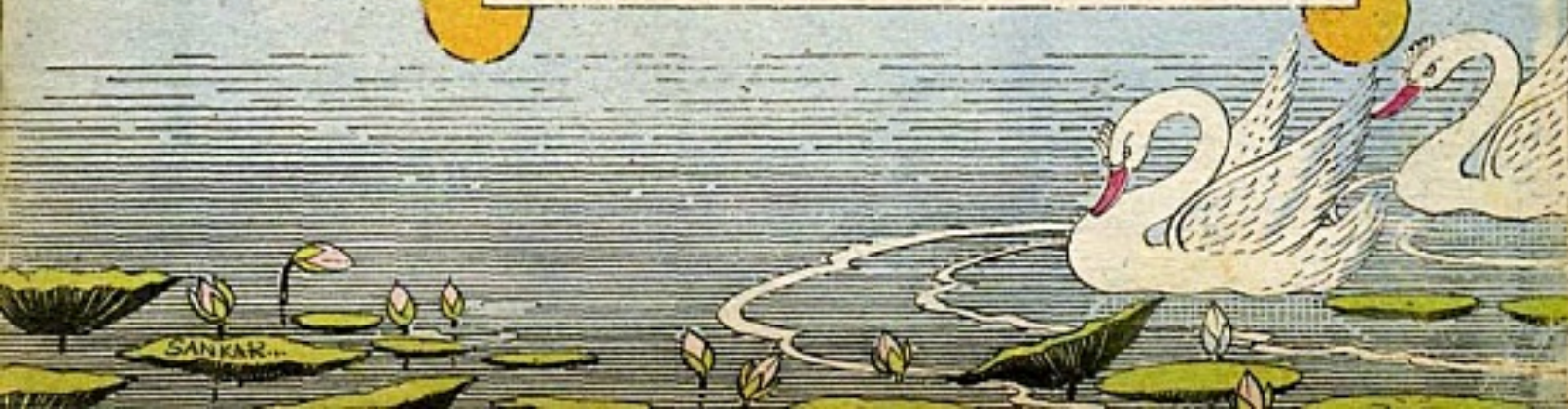
REWARD!

BRING 10 DIFFERENT WRAPPER STORIES AND THEIR WRAPPERS TO GET 3 MONOPACKS FREE

Big Babol

SOFT NON STICKY BUBBLE GUM

HURRY KIDS!

- Look out for wrapper stories inside Big Baból monopacks only
- Collect the reward from your nearest dealer
- Offer available in select cities

PERFETTI

McCann/PERFETTI/ 995

समाचार - विशेषताएँ

ऐर्लांड में शांति के प्रयत्न

ऐर्लांड की प्रजा के लिए सेंयिंट प्याट्रिक्स दिवस बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। ई.पू. की चौथी शताब्दी में यह सेल्ट्स का उपनिवेश मात्र था। नौ सौ सालों के बाद वहाँ ईसाई मत का विस्तार हुआ। प्याट्रिक का जन्म इंगलैंड में हुआ। वे जहाजी लुटुरों से पकड़े गये। उत्तरोत्तर उन्होंने ईसाई मिशनरी का शिक्षण पाया। लगभग ई.स. ४०० में वे ऐर्लांड आये। वहाँ ईसाई धर्म की व्याप्ति के लिए उन्होंने कठोर परिश्रम किया। ऐरिश की जनता उनका आदर करती है। मार्च २७ को बड़ी श्रद्धा से उनका स्मरण करती है।

इस वर्ष मार्च १७ को वाशिंगटन में 'वैट हौस' ने दो ऐरिश नेताओं के सम्मानार्थ एक सभा आयोजित की। ऐरिश प्रधान मंत्री जान ब्रूटन तथा सिनकिन संस्था के नेता जेर्रि आडम्स ने इस अभिनंदन-सभा में भाग लिया। गत पच्चीस सालों से, ऐरिश रिपब्लिक आर्मी (ऐ.आर.ए) ब्रिटेन से युद्ध करती आ रही है। जेर्री आडम्स के नेतृत्व में यह युद्ध होता आ रहा है। इसलिए अमेरीका ने उन्हें प्रतिनिधि के रूप में चुना और उनका अभिनंदन किया, जो ब्रिटेन को क़तई पसंद नहीं था। ऐ.आर.ए ने युद्ध-समाप्ति की घोषणा की और पिछले सितम्बर से सुस्थिर शांति के लिए वार्तालाप में संलग्न है। अत: अमेरीका महसूस करता है कि उन्हें राजनैतिक प्रतिनिधि के रूप में शामिल करके उसने कोई ग़लती नहीं की।

ऐर्लांड का दो खंडों में विभाजन हुआ है। युनैटेड किंगडम ('ग्रेट विटेन, स्काटलांड, वेल्स') से जो मिला हुआ है, वह नार्थरन ऐर्लांड कहा जाता है। रिपब्लिक आफ ऐर्लांड दक्षिणीप्रांत है। ग्रेटब्रिटेन के अधीन जो ऐर्लांड था, वहाँ १९२६ में विद्रोह हुआ। १९२१ में दक्षिणी प्रांत 'ऐरिश फ्री स्टेट' के रूप में अलग हो गया। उसने ब्रिटिश कामनवेल्थ को त्यज दिया और १९४९ में 'रिपब्लिक आफ ऐर्लांड' बना। १९१६ के विद्रोह में भाग लेकर ईमन दी वलेरा (सिनफिन) जेल गये। वे देश के नेता माने गये। उन्होंने १९१७ में ब्रिटेन से शांति की स्थापना के प्रयत्न किये किन्तु उनमें वे सफल नहीं हो पाये। वे १९३८ में प्रधान मंत्री बने। १९५१ में वे अध्यक्ष चुने गये।

उत्तर ऐर्लांड में प्रोटेस्टेंट्स अधिक संख्यक हैं। ब्रिटेन से अपने संबंधों को उन्होंने और मज़बूत किया। अल्प संख्यक रोमन काथलिकों ने महसूस किया कि उनकी लापरवाही हो रही है तो उन्होंने निश्चय किया कि ऐरिश रिपब्लिक से अपने संबंध जोड़ लें। १९६९ में दोनों पक्षों के बीच हिंसात्मक संघर्ष हुए। ऐर्लांड की एकता क लिए कटिबद्ध ऐ आर ए कार्यक्षेत्र में उतरा, जिससे ब्रिटिश सेना के साथ उनकी लड़ाई और तीव्र हुई। पच्चीस सालों तक यह लड़ाई ज़ारी रही। तीन हज़ार लोग मारें गये। १९९४, अगस्त को ए.आर.ए ने गोरिल्ला युद्ध-समाप्ति की घोषणा की। तब से सिनफिन राजनैतिक परिष्कार के प्रयत्नों में लगा है।

अमेरीका ने सिनफिन को बहुत पहले आतंकवादी संस्था मानकर उसका बहिष्कार भी किया। पर जब ऐ.आर.ए ने युद्ध-समाप्ति की घोषणा की। तब उसने अपना रुख बदला। अमरीकी अध्यक्ष बिल क्लिंटन की आशा है कि इंग्लैंड और ऐर्लांड के बीच समझौता होगा और शांति की स्थापना होगी। ऐसी स्थिति में उनके पर्वदिन पर दोनों पक्षों के नेताओं का अभिनंदन करना उचित ही तो है। इससे अच्छा मार्ग और क्या हो सकता है ?

व्यर्थ बातें

सुशांत और सुमन की शिक्षा एक ही गुरुकुल में हुई। गुरु ने सुशांत से व्यापार करने को कहा और सुमन से कहा कि पांडित्य प्राप्त करने और श्रम करो और अपने प्रयत्न ज़ारी रखो।

सुमन अपने गाँव गया और समस्त शास्त्रों के अध्ययन में मग्न हो गया। सुशांत ने शहर जाकर व्यापार किया और लाखों रुपये कमाये। धनी होने के कारण भाई-बंधु तथा कितने ही दोस्त उसके साथ रहने लगे। वे लोग उसकी प्रशंसा के पुल बाँधने लगे। उन लोगों की प्रशंसा सुन-सुनकर उसमें गर्व बढ़ता गया। वह अपने को बहुत बड़ा आदमी समझने लगा। उसे लग रहा था कि मेरे लिए सब कुछ संभव है। कोई ऐसा काम नहीं, जो मुझसे नहीं हो सकता। उसका विश्वास था कि धन के बूते पर किसी को भी खरीद सकता हूँ।

कुछ समय बाद एक दिन सुशांत के घर एक साधु आया। सुशांत ने उसकी अच्छी आव-भगत की। साधु ने पूछा कि पुत्र, बोलो, तुम्हें क्या चाहिये ?

सुशांत ने हँसते हुए कहा "स्वामी, मुझे जो जो चाहिये, उसे स्वयं कमा लिया है। मैं नहीं समझता कि आप मुझे कुछ देने की शक्ति रखते हैं। आपकी कोई इच्छा हो तो बताइये, मैं ही पूरी करूँगा"।

साधु ने मुस्कुराकर कहा "यह समझना अज्ञान है कि मेरे पास सब कुछ है। मेरी तो एकमात्र इच्छा है कि तुम ज्ञानार्जन करो"।

"मैंने जो भी कमाया, मेरे ज्ञान के ही कारण संभव हो पाया है। आपका कहना कि मैं ज्ञानार्जन करूँ, बड़ा ही विचित्र लग रहा है। अगर मैं ज्ञानी नहीं होता तो इतना धन कमाना मेरे लिए संभव हो पाता ? मैं तो ज्ञान की खान हूँ"। सुशांत ने कहा।

"ज्ञानी कभी भी व्यर्थ बातें नहीं करते। तुम अज्ञानी हो, इसीलिए तुमने मुझसे अपनी इच्छा

व्यक्त करने को कहा। मेरी इच्छा क्या है, इसकी कल्पना भी तुम नहीं कर सकते। जब तक तुम समझ नहीं पाओगे कि मेरी इच्छा की पूर्ति मानव के लिए संभव नहीं, तब तक ज्ञानार्जन करते ही रहो।'' साधु ने कहा।

सुशांत साधु की बातों पर नाराज़ हो गया। अपनी नाराजी को छिपाते हुए उसने कहा ''किसी ऐसे ज्ञानी को जानते हों तो बताइये, जो व्यर्थ बातें नहीं करता। उसके पास जाकर ज्ञान पाऊँगा। मेरा तो विचार है कि कोई ऐसा मानव नहीं, जो व्यर्थ बातें नहीं करता हो। चाहे वह ज्ञानी हो या अज्ञानी।''

''तो शकरापुर जाओ। वहाँ सुमन नामक एक ज्ञानी है। उससे ज्ञान प्राप्त करो।'' कहकर साधु चला गया।

सुमन का नाम सुनते ही सुशांत सोच में पड़ गया। कहीं वह उसका सहपाठी तो नहीं, जिसने उसके साथ गुरुकुल में शिक्षा पायी। क्योंकि सुमन शकरापुर में ही रहने लगा था।

सुशांत का विश्वास था कि जितने भी विद्यार्थियों ने गुरुकुल में शिक्षा पायी, उन सबों में से वही बड़ा आदमी बना। उसकी दृष्टि में बड़ा आदमी वही है, जिसने धन क़माया। और इतना धन गुरुकुल के किसी भी शिष्य ने कमाया नहीं। साधु की बातें सुनते ही उसे संदेह हुआ और साथ ही ईर्ष्या भी। वह तुरंत शकरापुर निकल पड़ा।

सुशांत शकरापुर के लोगों पर अपने बडप्पन
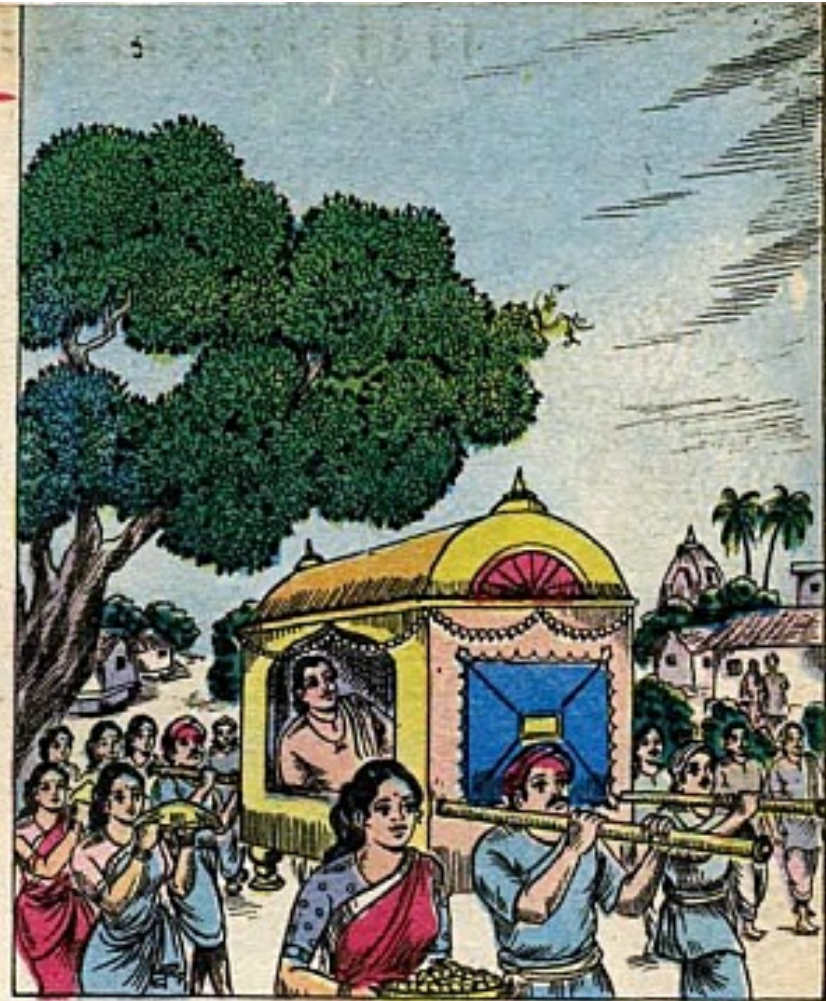
की धाक जमाना चाहता था। इसलिए वह बड़ी तैय्यारी व वैभव के साथ निकला। मोतियों की पालकी में आसीन होकर, दास-दासियों के साथ चार दिनों की यात्रा के बाद वह शकरापुर पहुँचा।

शकरापुर बहुत बड़ा गाँव था। वहाँ पहुंचकर उसने सुमन के घर का पता पूछा तो कोई भी बता नहीं पाया कि फ़लानी जगह पर सुमन का घर है। संयोगवश सुमन का एक शिष्य रास्ते में मिला तो पता चला कि सुमन कहाँ रहता है। वह उसे अपने घर के पास ले गया।

सुमन का घर साफ़-सुथरा तो था, पर था खपरैलों का एक छोटा-सा घर। उसके इस छोटे घर को देखकर सुशांत मन ही मन खुश हुआ।
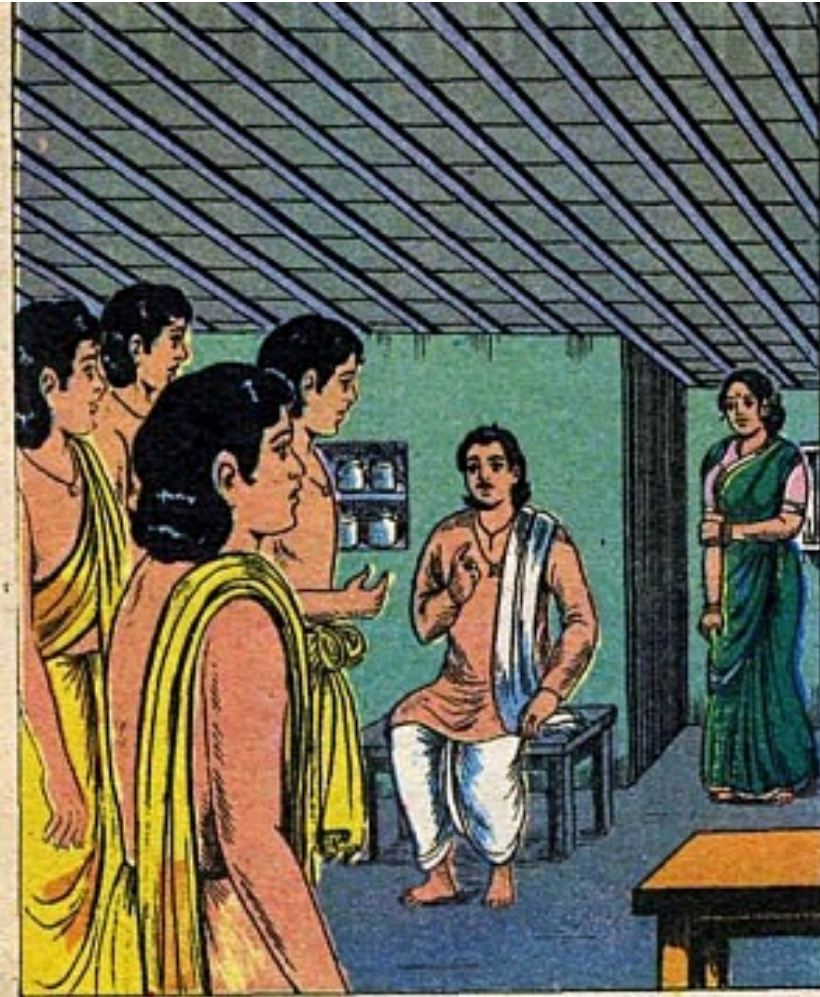
शहर में सात मंजिलों वाले उसके तीन महल हैं। उसने मन ही मन सोचा, मेरे सामने इसकी गिनती ?

सुमन उस समय घर पर नहीं था। ज़मींदार ने ख़बर भेजी तो पंडितों की सभा में भाग लेने गया हुआ था। कल ही लौटेगा। यह बात बताकर सुमन की पत्नी गीता ने सुशांत का सादर स्वागत सत्कार किया।

उस घर में सुमन के चार शिष्य थे। सुशांत ने उनसे बातें करके उनसे जानना चाहा कि सुमन के पास कितना धन जमा है। उन्होंने कहा "हम अच्छी तरह पढ़ रहे हैं, इसलिए गुरू ही हमारा पालन-पोषण कर रहे हैं और हमें पढ़ा रहे हैं। हम तो नहीं जानते कि उनके पास कितना धन है। हमें उनके धन से क्या लेना -देना है। हम यहाँ शिक्षा ग्रहण करने आये हैं और वे हमें बड़ी ही श्रद्धा से शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। यह हमारा भाग्य है कि हमें ऐसे महान गुरु मिले।"

सुशांत के साथ कुल मिलाकर बीस लोग वहाँ आये थे। गीता ने सबको स्वादिष्ट खाना खिलाया।

सुशांत ने शाम को शिष्यों को बुलाकर कहा "तुम्हारा गुरु मेरा मित्र है। उसे देखने के लिए आया हूँ। हर दिन इसी प्रकार का भोज दिया जाए तो तुम्हारा गुरु कर्ज़दार हो जायेगा, कंगाल हो जायेगा। मैं नहीं चाहता कि ऐसा हो। बताना कि किस दुकान से तुम खाद्य-सामग्री उधार में ला रहे हो। पूरी रक़म मैं चुका दूँगा"।

"हम कुछ भी नहीं जानते। गुरुजी के लौटने पर उन्हीं से जानियेगा" शिष्यों ने कहा।

दूसरे दिन सुमन लौटा, उसने अपने मित्र सुशांत को बड़े प्यार से गले लगाया और बातें जानीं। उसे इस बात पर बड़ी खुशी हुई कि उसका मित्र बहुत ही धनी और संपन्न है।

असंतुष्ट सुशांत ने कहा "अपने बड़पन से मैं संतुष्ट नहीं हूँ। जब तुम भी जब मेरे स्तर तक पहुँच जाओगे, तभी मुझे आनंद होगा। तुम्हारी जीवन-प्रणाली मुझे सही नहीं लग रही है। यहाँ बेनाम अपनी ज़िन्दगी गुजार रहे हो। इतने छोटे घर में रह रहे हो। अपनी पत्नी के लिए गहनें भी खरीद नहीं पाये। चार शिष्यों के पालन-पोषण की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले

रखी है। मैं समझ नहीं पाया कि तुम ज्ञानी हो या मूर्ख। मेरी बात मानो और मेरे साथ मेरे शहर आ जाओ। मैं तुम्हें व्यापार करना सिखाऊँगा"।

सच कहा जाए तो सुशांत को सुमन के प्रति रत्ती भर भी सहानुभूति नहीं थी। अपना बड़प्पन दिखाने के लिए वह डींग हाँक रहा था।

सुमन ने अपने मित्र की बातें ध्यान से सुनीं और कहा "मुझे गाँव छोड़कर आना हो तो पहले सब के कर्ज़ चुकाने होंगे। ऐसा नहीं किया तो कर्ज़दार मुझे जाने नहीं देंगे।"

सुशांत ने उन सबको बुलाने को कहा। शिष्य जाकर उन्हें बुला ले आये। वे कुल पाँच थे। एक ब्याज का व्यापारी था। दूसरे की किराने की दुकान थी। तीसरा था मिस्त्री। चौथा था तालपत्रों का विक्रेता। पाँचवाँ था गाड़ीवाला। कुळ मिलाकर सुमन को उन्हें देनी थीं, चार हजार अशर्फ़ियाँ।

"मैं आप सब लोगों का कर्ज चुका दूँगा। सुमन को यहाँ से जाने दीजिये"। सुशांत ने रोब जमाते हुए कहा।

इसपर ब्याज का व्यापारी दुखी होता हुआ बोला "महोदय, इनपर हमें पूरा विश्वास है। पुराने कर्ज को चुकाये बिना ही नया कर्ज देने हम तैयार हैं। हमें अच्छी तरह मालूम है कि गाँव छोड़कर जाने पर भी हमारा कर्ज वे चुका देंगे। इसलिये इन्हें जाने से रोकने का सवाल ही नहीं उठता"।

फिर भी सुशांत ने कहा कि आप सबका कर्ज मैं चुका दूँगा। तब उन पाँचों ने सुमन से कहा "महोदय, क्या हमने कभी भी आप पर

कर्ज चुकाने के लिए दबाव डाला, ज़ोर दिया ? तब कर्ज चुकाने की बात ही कहाँ उठती है ? इसकी आवश्यकता ही क्या है ? आप ऐसा इंतज़ाम करने पर क्यों आमादा हो गये?'' उन्होंने यों अपना दुख व्यक्त किया।

सुमन ने उन्हें सांत्वना देते हुए कहा ''मैं जानना चाहता था कि मेरा मित्र मुझे कितना चाहता है। इसी की परीक्षा ली मैंने। मेरे कर्ज़ को किसी और से चुकाने नहीं दूँगा। आप लोग निश्चिंत रहिये।''

सुशांत चकित होता हुआ बोला ''तुमने मेरी परीक्षा ली? क्यों?'' ''क्यों की क्या बात है। पहली बार मेरे घर आये हो। अगर साबित हो जाए कि तुम मुझे चाहते हो तो तुम्हारी इच्छा पूरी करना मेरा धर्म है ना?'' सुमन ने कहा।

सुमन की बातों पर और आश्चर्य प्रकट करते हुए सुशांत ने कहा ''तुम मेरी इच्छा की पूर्ति करोगे? माँगी दोगे? खूब सोचकर ही बात कर रहे हो ना?''

''बिना सोचे मैं कभी कोई बात नहीं करता। इसलिए नित्संकोच पूछो।'' सुमन ने कहा।

सुशांत को साधु की बातें याद आयीं। उसने सुमन को महाज्ञानी कहा। उसने कहा कि ज्ञानी व्यर्थ की बातें नहीं करते। अगर मैं साबित करूँ कि सुमन व्यर्थ बातें करता है तो इसका मतलब हुआ कि वह ज्ञानी नहीं है। उसे लगा कि सुमन को व्यर्थ बातें करनेवाला प्रमाणित करना अब उसके बायें हाथ का खेल है।

सुशांत सोच में पड़ गया और आख़िर बोला ''मेरा बहुत-सा धन व्यापार में फंस गया है। तुरंत बीस लाख अशर्फ़ियाँ मिल जाएँ तो दो करोड़ अशर्फ़ियाँ कमा सकता हूँ। तुमने तो वादा किया था कि मेरी मांग पूरी करोगे। अब मुझे बीस लाख अशर्फ़ियाँ कर्ज़ में दो।''

उसकी माँग को सुनकर वहाँ उपस्थित सब लोग भौंचक्का रह गये। सुमन उसकी इच्छा जानकर थोड़ा भी विचलित नहीं हुआ, अशांत नहीं हुआ। उसने सुशांत से कहा ''मैं तुमसे एकांत में बात करना चाहता हूँ। अंदर आना।''

सुशांत ने 'ना' के भाव में अपना सिर हिलाते हुए कहा ''तुमने मेरी मित्रता की परीक्षा सबके समक्ष की। तुम ज्ञानी हो। कहते हैं कि ज्ञानी

व्यर्थ बातें नहीं करते। सबके सामने ही इसका उत्तर दोगे तो मुझे बेहद खुशी होगी''। उसने ज़िद की।

सुमन ने उसे समझाने की बहुत कोशिश की, पर सुशांत अपनी ज़िद पर डटा रहा। आख़िर सुमन के शिष्यों ने दख़ल देते हुए कहा ''गुरुजी, आपके ज्ञान-दान से अधिक हमारे लिए इस संसार में कुछ और नहीं है। आपके मित्र ने जिस धन की माँग की, क्या हम उसे लाकर दें ?''

सुशांत नाराज होता हुआ बोला ''एक वक़्त का खाने के लिए भी नहीं है, ऐसे तुम बीस लाख अशर्फ़ियाँ लाकर दोगे?''

सुमन ने हँसते हुए कहा ''इन्हें भिखारी मत समझो। वे करोड़पतियों के बेटे हैं। ज्ञानार्जन के लिए मेरे पास आये हैं। धन से मनुष्य को बनावटी आदर मिलता है। ये नहीं चाहते थे कि दूसरों को मालूम हो कि वे कितने संपन्न हैं। इसलिए हम दोनों ने इसे गुप्त ही रखा। मेरे विषय में भी यही बात सच है। जब-जब मैं पंडितों की गोष्ठी में जाता हूँ, तब-तब कितने ही राजाओं, जमींदारों और करोड़पतियों ने मूल्यवान मोती, हीरे, जवाहरात दिये। वे सब अब भी मेरे पास हैं। मैं चाहता था कि यह रहस्य, रहस्य बनकर ही रहे, किन्तु तुम्हारे हठ और मूर्खता के कारण सब के सामने रहस्य खोलना पड़ा। तुम्हारे बीस लाख की माँग की पूर्ति मेरे एक हीरे से हो सकती है''। कहकर वह कमरे के अंदर गया और हीरा लेकर आया।

हीरे को देखकर सुशांत सन्नाटे में आ गया। उसने धीमे स्वर में कहा ''मैं साबित करना चाहता था कि तुम भी व्यर्थ की बातें करते हो। पर अब मैं जान गया हूँ कि मेरा जीवन ही व्यर्थ है। पंडित, ज्ञानी कभी भी आडंबरमय जीवन बिताना नहीं चाहते। दिखावा उन्हें पसंद नहीं। मैं इस सत्य को जान नहीं पाया। तुम्हें छोटा दिखाने इतनी दूर चला आया। मुझे क्षमा करो और ज्ञान-की भिक्षा दो।''

सुमन ने सुशांत को कुछ समय तक उपनिषदों का सार बताया। उसके अहंकार को तोड़ा। उसे नम्र बनाया। सुशांत के दुर्गुण उससे जाते रहे। उसने सबसे शाश्वत गौरव पाया, जिसके लिए धन की कोई आवश्यकता नहीं।

जैसी सास वैसी बहू

समीरा नामक एक गाँव में सक्कू नामक एक धनी औरत थी। उसकी कंजूसी के बारे में लोग बड़ी ही अजीब कहानियाँ सुनाया करते थे। ये बातें सक्कू के कानों में पड़ीं। यह कहकर अपना समर्थन करने लगी कि यह कंजूसी नहीं बल्कि किफ़ायत है।

उसका पति बहुत पहले मर चुका था। अपने इकलौते बेटे श्याम को उसने बड़े लाड़-प्यार से पाला था। जब उसकी शादी की उम्र हो गयी तो वह बहू की खोज में रत रही।

सक्कू बड़ी ही कंजूस थी, पर उसके पास बहुत ही धन था। इसलिए बहुत-से लोग रिश्ता माँगने आये। ऐसे लोगों से वह कहती कि मैं आपकी बेटी की परीक्षा लूँगी। उसमें वह उत्तीर्ण हो जाए तो अपनी बहू बनाऊँगी।

उसकी परीक्षा में सब की सब कन्याएँ हार गयीं। कुछ कन्याओं ने अपने माता-पिता के ज़ोर देने पर ही इस परीक्षा में भाग लिया। उन्हें सक्कू जैसी कंजूस सास की बहू बनने की इच्छा ही नहीं थी।

उसे एक बार मालूम हुआ कि पड़ोस के गाँव में एक अच्छा रिश्ता है, तो वह उनके घर गयी। इधर-उधर की बातें करने के बाद उसने वहाँ भोजन भी किया। फिर उस लड़की से उसने पूछा "तुम्हारा नाम रुक्मिणी है ना। नाम तो बहुत अच्छा है। पहले खाकर आ जा, फिर तुम्हारी परीक्षा लूँगी।"

तब रुक्मिणी ने कहा "हमारे घर में हर रोज़ जो ख़र्चा होता है, उससे दुगुना खर्च अगर हो जाए तो उसकी पूर्ति के लिए हम कुछ ना कुछ करते हैं। इसलिए मैं आज खाना नहीं खाऊँगी।"

उस लड़की के जवाब से सक्कू बहुत प्रसन्न हुई। उसने कहा "किफ़ायत में तो तुम मुझसे भी बढ़कर हो। तुम्हारी जैसी बहू को पाना मेरा भाग्य है।"

- अरविंद
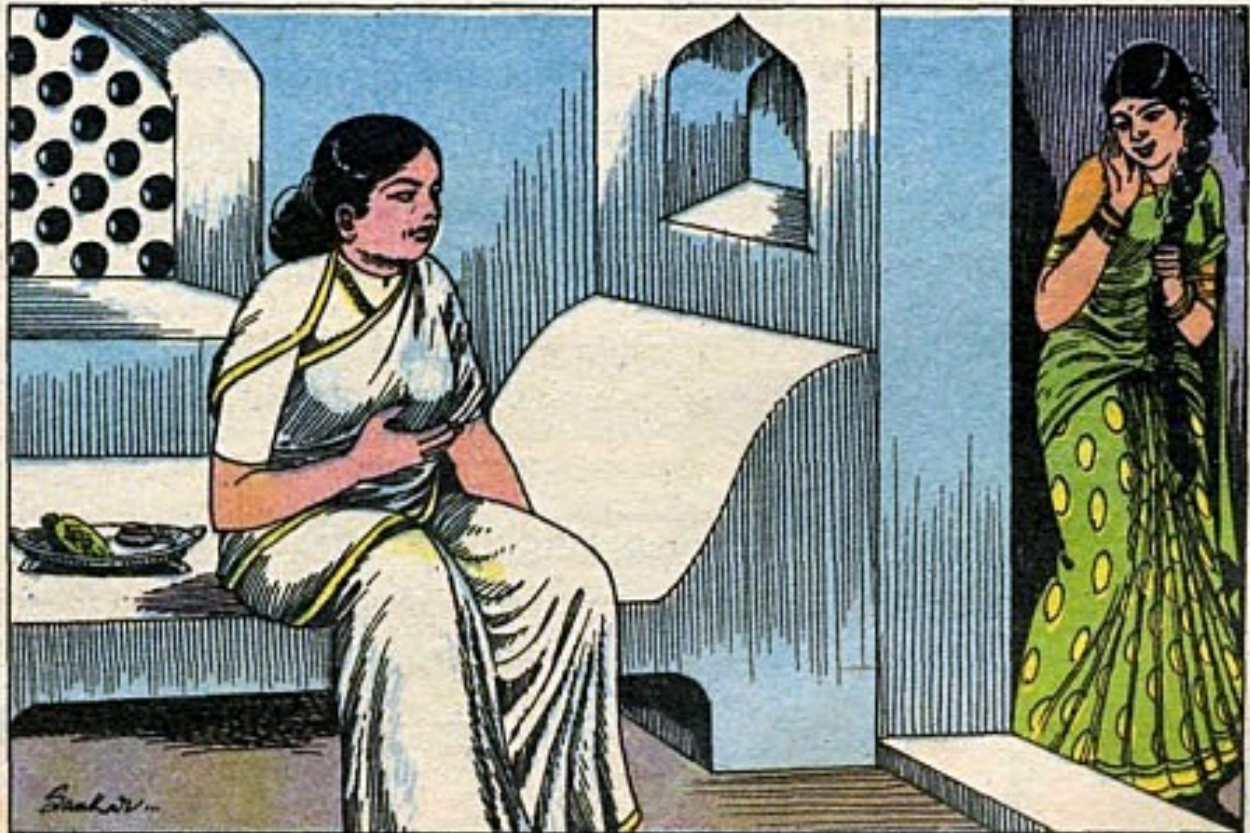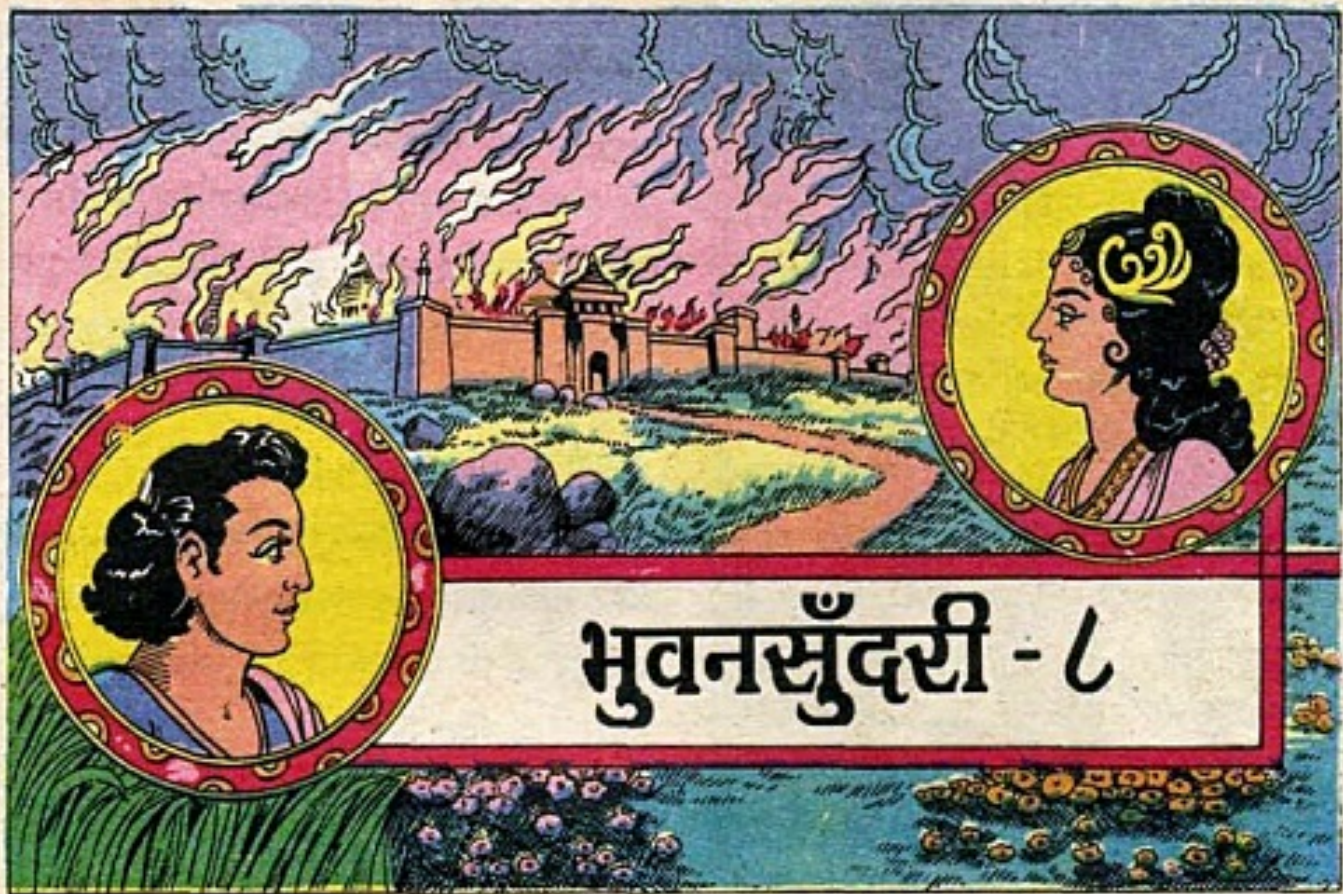
(ग्रीकों ने ट्रोय नगर को दस सालों से घेर रखा था। इन दस सालों में दोनों पक्षों में से कितने ही महान योद्धा मर चुके थे। यह सब हुआ भुवनसुँदरी के कारण। ग्रीक पक्ष के मरे प्रमुख योद्धा थे वज्रकाय और भूधव। ट्रोजन के प्रमुख वीरों में से दिवंगत योद्धा थे वीरसिंह और मोहन। मोहन के मरते ही अरिभयंकर ने ज़बरदस्ती भुवनसुँदरी से शादी कर ली। रूपधर वह ग्रीक वीर था, जिसने ट्रोय के पतन का बीड़ा उठाया था। इस दिशा में उसे भुवनसुँदरी व उसकी सास का भी सहयोग प्राप्त हुआ)

ट्रोय के पतन के पूर्व ही वर्धन के पुत्रों में तीव्र अंत:कलह का आरंभ हो गया।

वर्धन ने इस परिस्थिति को संभालने के लिए ग्रीकों से समझौता करने का निश्चय किया। इसके अलावा उसके पास दूसरा चारा भी नहीं था। वीरसिंह और प्रताप जैसे योद्धा मर चुके थे। उनकी पूर्ति करनेवाला साहसी कोई रह भी नहीं गया। जो बच गये, वे आपस में एक दूसरे से लड़ रहे हैं। शत्रुओं से लड़ने के लिए उनमें ना ही उत्साह है, ना ही तत्परता। इसलिए उसने रहस्यपूर्वक एक प्रयत्न भी किया। उसने अपने साले प्रत्याम्नाय को राराजा के पास भेजा। प्रत्याम्नाय अरिभयंकर को बिल्कुल चाहता नहीं था। उससे घृणा करता था। इसलिए उसने वहाँ जाकर अपने को केवल समझौते तक ही सीमित नहीं रखा, बल्कि रूपधर से मिलकर एक षड़यंत्र भी रचा। योजना बनी। योजना के अनुसार ट्रोय का राजसिंहासन और राज्य के खज़ाने का आधा
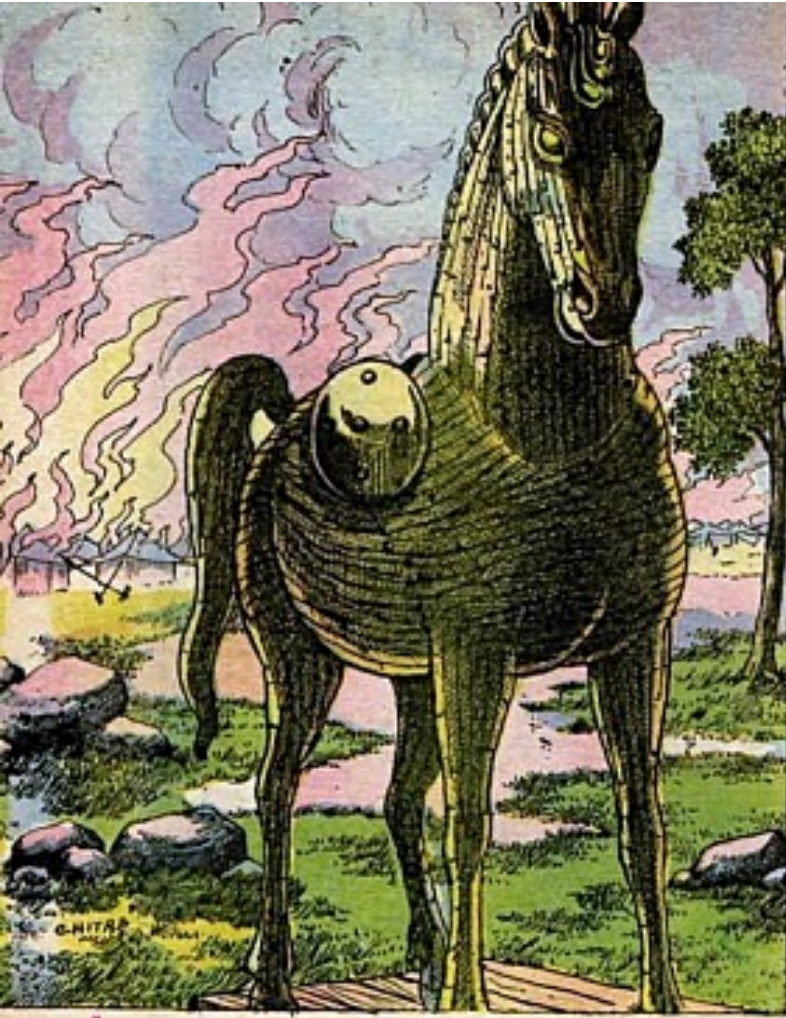
भाग प्रत्याम्नाय को प्राप्त होगा। और उसके बदले वह ट्रोय को रूपधर के सुपुर्द करेगा। प्रत्याम्नाय ने रूपधर को वचन भी दिया कि इस कार्य-प्रणाली में प्रशंसन भी मदद पहुँचायेगा।

इतिहास की अनेकों घटनाओं से हमें विदित होता है कि किसी राज्य अथवा देश का पतन अंत:कलहों से होता है। हर कोई अपना उल्लू सीधा करने में लग जाता है। परस्पर विश्वास व प्रयास नहीं होते। स्वार्थ से प्रेरित होकर अपने देश का विनाश करने पर तुल जाते हैं। इससे शत्रु का काम सुलभ व सुगम हो जाता हैं। ट्रोय के पतन के कारणों में से यह कारण प्रबल व प्रमुख था।

ट्रोय नगर में कुछ ऐसे भी व्यक्ति थे, जो ग्रीकों की सहायता करने सन्नद्ध थे। उस नगर से बुद्धिमति की मूर्ति का अपहरण हुआ। ट्रोय नगर के पतन के लिए आवश्यक परिस्थितियों की आयोजना हुई। अब केवल ग्रीकों को नगर में प्रवेश करना मात्र था। इसके लिए उन्होंने एक अद्‌भुत तथा विराट काठ के घोड़े का निर्माण-कार्य भी आरंभ कर दिया।

इस घोड़े का निर्माण किया दोर्धंड ने। ग्रीकों की तरफ़ से लड़ने के लिए तीस नौकाओ को लेकर आया हुआ था। वह बहुत बड़ा शिल्पी था। मल्लयुद्ध में भी प्रवीण था। पर था, बहुत ही कायर। इसने काठ का घोड़ा बनाया और एक तरफ़ दरवाज़े का प्रबंध भी किया। यह दरवाज़ा ऊपर से किसी को नहीं दीखता। दूसरी तरफ लिखा गया कि ग्रीकों की वापसी यात्रा सुखप्रद हो, इसके लिए बुद्धिमतिदेवी को ग्रीकों से समर्पित उपहार। घोड़े के पेट में रस्सी की बनी एक सीढी का भी प्रबंध हुआ, जिससे बाहर आ सकें।

ग्रीक वीरों में से जितने भी साहसी थे, उन सबको घोड़े के पेट में छिपने के लिए रूपधर ने मनाया। इनमें प्रताप, रूपधर, देवमय और लगभग तीस वीर थे। शिल्पी दोर्धंड भी इनमें से एक था। जब सब लोग घोड़े के पेट में घुस गये। तब उसने रस्सी से बनी सीढ़ी अंदर खींच ली और दरवाजा बंद कर लिया।

शेष कार्यक्रम रूपधर की योजना के अनुसार हुआ।

उस दिन रात को, जब अंधेरा छा चुका था, ग्रीकों ने अपने शिबिरों में आग लगा दी। घोड़े

के पेट में छिपे ग्रीक वीरों के अलावा, बाक़ी जितने भी थे, राराजा के साथ जहाज़ों में निकल पड़े। टेनेडोस द्वीप से थोड़ी दूरी पर इन्होंने लंगर ड़ाल दिया। किन्तु एक ग्रीक योद्धा मात्र काठ के घोड़े के साथ ट्रोय के तट पर ही जान-बूझकर ठहर गया। योद्धा रूपधर का पुत्र था। उसका नाम था चौर्यनाथ। ग्रीक जहाज़ों को कब लौटना है, ज्योति जलाकर संकेत देगा चौर्यनाथ।

सबेरा होने पर ट्रोय के गुप्तचर ग्रीकों के शिविरों में आये, यह देखने कि वहाँ क्या हो रहा है। उन्होंने नगर में आकर बताया कि पूरे के पूरे ग्रीक शिबिर जल गये हैं। उन्होंने यह भी बताया कि एक काठ के घोड़े को समुद्री तट पर छोड़कर सारे के सारे ग्रीक जा चुके हैं।

वर्धन अपने पुत्रों समेत काठ के घोड़े को देखने के लिए वहाँ आया।

जब सब लोग उस विराट काठ के घोड़े को आश्चर्य से देख रहे थे तब उनमें से एक ने कहा, "जब यह बुद्धिमति देवी को समर्पित उपहार है, तो इसे क्यों नगर में ले जाया ना जाए और उसी के मंदिर के सम्मुख क्यों ना रखा जाए"।

एक और ने कहा "बुद्धिमती देवी ने इस युद्ध में हमसे अधिक शत्रु पक्ष की सहायता की है। हम इसे अभी यहीं जला डालेंगे। नहीं तो, इसे तोड़ेंगे और देखेंगे कि इसके पेट में है क्या ?"

वर्धन ने इस प्रस्ताव का खंडन किया। उसने कहा "देवी को समर्पित उपहार का नाश पाप है। इस उपहार का नाश कर देने पर हमें शायद नष्ट भी पहुँचे। मैं नहीं मानता कि बुद्धिमती देवी ने हमारा साथ नहीं दिया, शत्रु पक्ष का

साथ दिया। मेरा विश्वास है कि इस देवी की कृपा के कारण ही ग्रीक लौट गये हैं। इनकी कृपा-दृष्टि हमपर सदा रहे, इसके लिए हमें इनकी पूजा करनी है। पुनः इस मूर्ति की प्रतिष्ठापना करनी चाहिए, इसलिए हम इस घोड़े को पहियों पर रखकर नगर ले जायेंगे''।

वर्धन के आज्ञानुसार काठ के घोड़े को पहियों पर चढ़ाया गया और उसे क़िले के द्वार तक ले जाया गया। किन्तु द्वार छोटा पड़ गया। इसलिए ट्रोजनों ने क़िले की दीवार के एक भाग को तोड़ा और उस विशाल घोड़े को अंदर ले गये। अंदर ले आने में उन्हें काफ़ी कठिनाई हुई। घोड़ा जैसे ही अंदर ले आया गया, तोड़ी गयी दीवार के भाग को यथाप्रकार बना दिया। फिर घोड़े को नगर के बीच में ले आये।

अब घोड़े को लेकर ट्रोजनों में तर्क -वितर्क हुए। भिन्न-भिन्न विचार व्यक्त किये गये। झगड़े तक हुए। वर्धन की पुत्री जालिनी दिव्य दृष्टि रखती थी। वह घोड़े को देखकर चिल्ला पड़ी ''इसमें हथियार बंद योद्धा हैं''।

प्रत्याम्नाय के पुत्र तीक्षणदृष्टि ने जालिनी का समर्थन किया। ''तुम लोग मूर्ख हो। नहीं तो दान में दिये गये घोड़े को यहाँ क्यों ले आ ते?'' कहते हुए उसने अपने शूल को घोड़े पर ज़ोर से फेंका। ठीक उसी समय पर घोड़े के पेट में हथियारों की खनखनाहट की ध्वनि सुनायी पड़ी जो शोर के बीच किसी को सुनायी नहीं पड़ी।
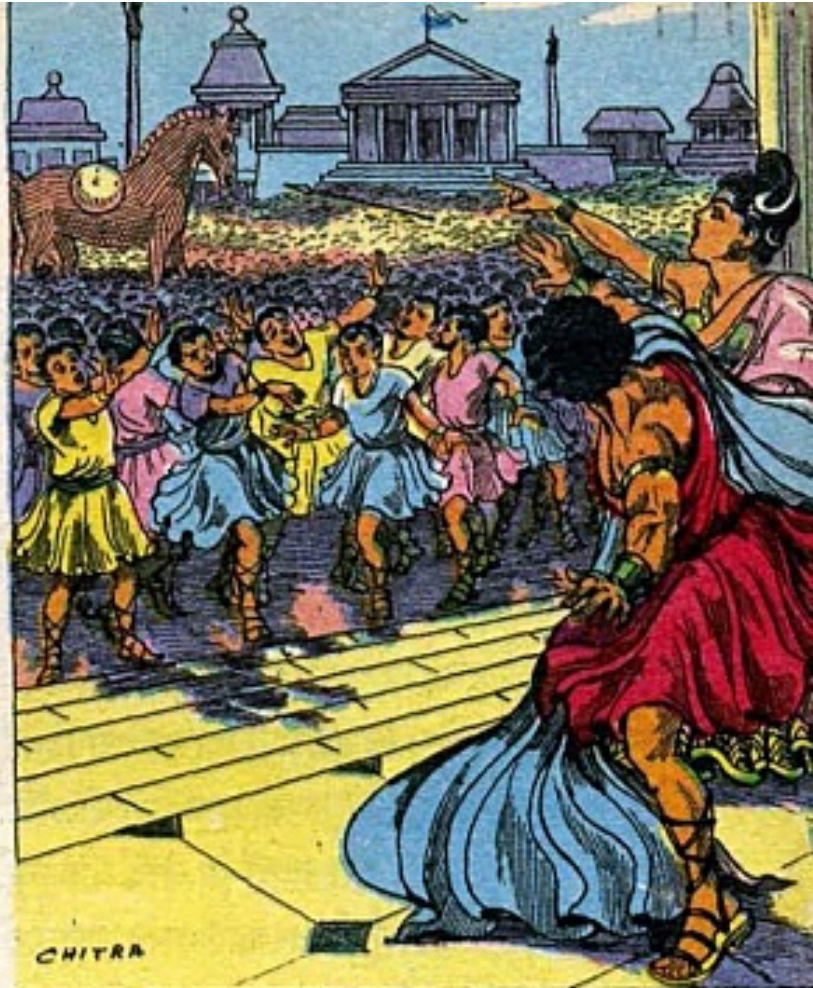
घोड़े को चारों तरफ़ से घेरे लोगों ने चिल्लाना शुरु कर दिया ''इसे जला डालो। नहीं तो उठाओ और क़िले की दीवारों के उस पार फेंको''। किन्तु वर्धन के पक्ष के लोग, लोगों से विनती कर रहे थे कि काठ के घोड़े को नष्ट मत पहुँचाओ।

इस विषय को लेकर ट्रोजन जनता परस्पर वाद-विवाद में लगी हुई थी, तब दो ट्रोजन सैनिक ग्रीक के एक वीर को बंदी बनाकर वहाँ ले आये। यह चौर्यनाथ था। ट्रोज़नों ने चौर्यनाथ से तरह-तरह के सवाल किये। वह रूपधर से भली-भांति प्रशिक्षण पा चुका था, इसलिए उन्हें विश्वास दिलाते हुए वह यों कहने लगा।

''प्रबोध के हत्या-रहस्य से मैं भली-भांति परिचित हूँ। रूपधर मुझसे बहुत ही नाराज़ है,

क्योंकि मैं उसका रहस्य जानता हूँ। ग्रीक युद्ध से विमुख हो गये हैं। उनमें लड़ने की इच्छा रंच मत भी शेष रह नहीं गयी। वातावरण साथ देता तो वे कभी लौट पड़ते। ट्रोय पर हमला करने के लिए जब वे निकले, तब भी वातावरण ने उनका साथ नहीं दिया तो बलियाँ चढ़ाकर उन्होंने वायुदेव को संतृप्त किया, मना लिया। इस बार रूपधर ने कांशुक से पूछा "बोलो, किसकी बलि चढ़ायें? कांशुक ने दस दिनों की अवधि मांगी। मेरा विश्वास है कि इन दस दिनों के अंदर रूपधर ने कांशुक को बख्शीश दी और अपना बना लिया। दस दिनों के बाद कोंशुक सभा में आया और मेरी तरफ़ उँगली उठाकर दिखाया। मुझे बंदी बनाया गया। मेरी बलि चढ़ानेवाले ही थे कि हवा अनुकूल चलने लगी। वातावरण में परिवर्तन आया। सबों ने मेरी बात भुला दी और यात्रा के प्रयत्नों में संलग्न हो गये। उस भागदौड़ में मैं बचकर भाग निकला", वर्धन ने चौर्यनाथ की हर एक बात का विश्वास किया। उसने उससे पूछा कि तो फिर इस घोड़े के बारे में तुम्हारे क्या विचार हैं ?

"यह सच है कि बुद्धिमती देवी हमारे अनुकूल थी। किन्तु रूपधर और देवमय ने जब से इस मूर्ति की चोरी की, तब से वह हमपर क्रोधित है । जब यह मूर्ति हमारे शिविरों में लायी गयी, तब मूर्ति से तीन बार ज्वालाएँ फूटीं। मूर्ति के पॉव पसीने से भीग गये। स्पष्ट हो गया कि देवी क्रोधित है। अब ग्रीकों ने निश्चय किया कि युद्ध समाप्त करके लौटना ही श्रेयस्कर है। उन्होंने बुद्धिमती देवी को एक

उपहार देकर लौटने का निश्चय किया। कांशुक ने राराजा को सलाह दी कि हम यहाँ से तुरंत लौट चलें और किसी शुभ मुहूर्त पर पुनः युद्ध करने वापस आवें।'' चार्यनाथ ने कहा। उसने बड़ी ही चतुराई से उन्हें विश्वास दिलाया। अपने बुद्धि-बल से एक सुंदर कहानी गढ़ी।

वर्धन ने पूछा ''इतने बडे घोड़े का निर्माण क्यों किया? ''ग्रीक चाहते थे कि आप इसे नगर में ना ले जाएँ। उनका विचार था कि आप अगर बुद्धिमतीदेवी की मूर्ति की ओर ध्यान नहीं देंगे, उसकी परवाह नहीं करेंगे, तो वह अवश्य ही आपसे नाराज़ होगी। परंतु उनका विचार ग़लत निकला। आप इस घोड़े को नगर के मध्य ले आये। अब आपकी पराजय का प्रश्न ही नहीं उठता। आपका साम्रोज्य चारों दिशाओं में विस्तरित होगा। वे नहीं चाहते थे कि ऐसा हो, इसीलिए उन्होंने इतने बड़े घोड़े का निर्माण किया''। चौर्यनाथ ने कहा।

''यह सफ़ेद झूठ है। रूपधर का षड़यंत्र है। वर्धनं, इन बातों का विश्वास करके अपने पैरों पर खुद कुल्हाड़ी मत मारो'' तीक्षणदृष्टि चिल्ला पड़ा। उसने कहा भी ''मैं अभी अपने इष्ट देवता कुबुलिचि के समक्ष जाऊँगा और मार्ग जानूँगा कि इस घोड़े को कैसे जला दिया जाए।''

परंतु तीक्षणदृष्टि यह काम नहीं कर पाया। ट्रोय नगर को वह बचा भी नहीं पाया। क्योंकि जैसे ही वह घर पहुँचा, दो महासर्पों ने उसके दोनों बेटों को डस ड़ाला और मार दिया। अपने बच्चों की रक्षा के प्रयत्न में वह भी मर गया। काठ के घोड़े के सर्वनाश के उसके प्रयत्न विफल हो गये। भाग्य ने ग्रीकों का ही साथ दिया। ये संकेत मात्र थे, जो स्पष्ट बता रहे थे कि ट्रोय का पतन निश्चित है। इस शगुन से चौर्यनाथ की कही झूठी बातों पर ट्रोजनों का विश्वास और बढ़ गया। वर्धन को लगा कि बुद्धिमती देवी के उपहार पर बाण फेंकने के अपराध में उसे देवी ने समुचित दंड दिया है। मंत्रोच्चारण के मध्य काठ के घोड़े को बुद्धिमती देवी को अर्पित किया गया। ट्रोजन की स्त्रियाँ नहा-धोकर फूल की मालाएँ ले आयीं। काठ के घोड़े को उन मालाओं से अलंकृत किया। प्रशंसन अपने सैनिकों के साथ चुपचाप ऐडा पर्वत पर चला गया।

(सशेष)

'चन्दामामा' की ख़बरें

कमाल का तैराक़

गहरे पानी में दूर-दूर तक तैरना बायें हाथ का खेल है, यह साबित कर रहे हैं मद्रास के कुट्रालीश्वरन और उसी की उम्र की बाल-बालिकाएँ। जी. डिलीज नामक एक फ्राँसीसी तैराक़ ने अटलांटिक समुद्र में अकेले ही तैरने का निश्चय किया। पिछले दिसंबर १६ को अफ्रीका का बेर्ड्री द्वीपाग्र से निकला और तैरते हुए दो महीनों के बाद बार्बडोस के ब्रिड़जटौन में पहुँचा। तैरते समय फ्लैप्पर्स को इस्तेमाल में लाता था और चार मीटर लंबे लट्ठों के बेड़े पर सोता था। थामस और क्लेमेंट उसके दो बच्चे थे। उन्होंने अपनी माँ केथरिन के साथ वहाँ पहुँचकर बड़े आनंद से अपने पिता का स्वागत किया।

आँखों की बिक्री

नेत्रदान के बारे में सब जानते हैं। मानवता के कल्याण के लिए किये जानेवाले कार्यों में इसकी भी विशेष रूप से परिगणना होती है, किन्तु मूत्रपिंड की तरह आँखों की बिक्री नहीं हो सकती। जिन आँखों की बिक्री का हम यहाँ जिक्र कर रहे हैं, वे आँखें साधारण मनुष्य की आँखें नहीं हैं। डा. हेनरी अब्राम्स के पास सुप्रसिद्ध भौतिक शास्त्रवेत्ता आइन्स्टीन की आँखें हैं। किसी भी क़ीमत पर इन्हें खरीदने के लिए बहुत-से लोग सन्नद्ध हैं। खरीदने की इच्छा रखनेवालों में से सुप्रसिद्ध गायक मैकेल जाक्सन भी हैं। १९५५ में जब आइन्स्टीन की मृत्यु हुई, तब उनके शरीर के कुछ भाग 'आटोप्सी' द्वारा बाहर निकाले गये हैं। डा. थामस हार्वे ने 'आटोप्सी' की थी। उनके पास अब भी आइन्स्टीन का मस्तिष्क है। उनका कहना है कि जब 'आटोप्सी' की गयी, तब उनकी आँखें निकाली नहीं गयीं। इस विषय को लेकर मतभेद बना हुआ है। समस्या का परिष्कार नहीं हो पाया।
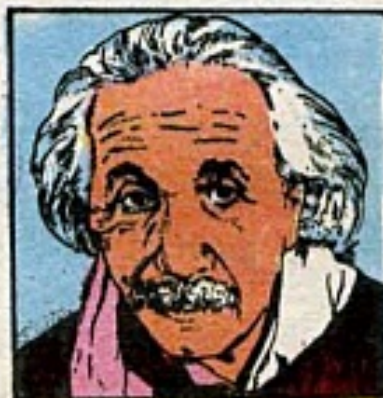
सबसे बूढ़ी कौन?

गिन्नीस बुक आफ रिकार्ड्स के मुताबिक़ संसार की सबसे बूढ़ी औरत हैं, फ्राँस की जिन लूसी काल्मेंट। हाल ही में उन्होंने अपना १२१ वाँ जन्म-दिनोत्सव मनाया। परंतु ब्रिजेल की जेरोनिमा नामक बूढ़ी का दावा है कि मैं लूसी काल्मेंट से उम्र में बड़ी हूँ। इसे साबित करने के लिए उनके पास आधार तो नहीं हैं, लेकिन मालूम हुआ कि वह १८७१ मार्च ११ को एक गुलाम ख़ानदान में पैदा हुई। पैदा होने के सत्रहवें दिन एक गिरिजाघर में उनका नामकरण हुआ। १८८८ में ब्रेजिल में गुलामी प्रथा का निर्मूलन हुआ। डाक्टरों का अभिप्राय है कि चार फुट के क़द की जेरोनिमा ने वृद्धावस्था में देर से क़दम रखा। अब हमें देखना है कि गिन्नीस बुक के अधिकारी क्या अपने रिकार्डों को बदलेंगे ?

तीन त्यागी

धुन का पक्का विक्रमार्क फिर से पेड़ के पास गया। पेड़ से शव को उतारा और अपने कंधे पर डाल लिया। यथावत् श्मशान की ओर बढ़ने लगा। तब शव के अंदर के बेताल ने कहा "राजन्, तुम सर्वसंपन्न हो। देश के राजा हो। जो चाहो, तुम्हें उपलब्ध हो सकता है। सुख-सागर में डुबकियाँ लगा सकते हो। फिर भी तुमने सब कुछ त्याग दिया। सुख-संपदा को लात मारकर अकेले आधी रात को इस घनघोर अंधकार में भटक रहे हो। तुम्हारा यह रुख देखकर मुझे आश्चर्य भी हो रहा है और संदेह भी। राजा को केवल अपने शत्रुओं से ही नहीं बल्कि अपने कपटी मित्रों तथा सेवकों से भी सावधान रहना चाहिये, चौकन्ना रहना चाहिये। अपनी रक्षा के लिए सदा जागरूक रहना चाहिये। अपने आस्थान में काम पर लगे सब कर्मचारियों को विश्वासपात्र मानकर हाथ धरे बैठना एक राजा की मूर्खता

बैताल कथा

होगी, अविवेकपूर्ण निर्णय सिद्ध हो सकता है, घातक प्रमाणित हो सकता है। राजनीति के इस प्रधान सूत्र को भुलाकर अपने आस्थान के एक गुप्तचर के लिए अपना प्राण भी दॉव पर लगानेवाले राजा चंद्रसेन की कहानी मुझसे सुनो।'' बेताल यों राजा चंद्रसेन की कहानी सुनाने लगा।

बहुत पहले की बात है। शरश्चंद्रिका राज्य के राजा चंद्रसेन के आस्थान में शिवदत्त नामक युवक गुप्तचर का काम कर रहा था। वह राजा को बहुत चाहता था। उसकी राजभक्ति अचंचल थी। जो कार्य उसे सौंपा जाता था, उसे अपने प्राणों की भी बाजी लगाकर पूर्ण करता था। उसपर चंद्रसेन का अटल विश्वास था।

शरश्चंद्रिका राज्य का पड़ोसी राज्य था मणिपुर। उसका शासक था प्रचंड। कुछ दिनों से वह शरश्चंद्रिका राज्य को हड़पने के प्रयत्न में संलग्न था। चंद्रसेन को उसके मन की बात मालूम हुई। शत्रु के आक्रमण के पहले ही उसने उस राज्य पर आक्रमण करने की ठानी। आक्रमण के पहले उसने जानना चाहा कि प्रचंड की कितनी सेना है, उसके पास क्या-क्या हथियार हैं, उसकी युद्ध-योजना क्या है? वह यह भी जानना चाहता था कि दुर्ग में प्रवेश करने का कौन-सा मार्ग सुगम है। उसने इन सारे विवरणों को जानने का उतरदायित्व शिवदत्त को सौंपा।

शिवदत्त ने एक साधारण नागरिक के वेष में गुप्त रूप से मणिपुर में प्रवेश किया। बड़ी ही चतुराई से उसने वे सब विवरण इकट्ठे हुए, जिनसे मालूम हो पाया कि मणिपुर की सेना की शक्ति क्या है, उनके पास कौन-कौन से हथियार हैं और दुर्ग में आसानी से कैसे प्रवेश हो सकता है।

पूरी जानकारी प्राप्त करने के बाद अपने राजा को संपूर्ण ब्योरा देने के उद्देश्य से बड़े ही उत्साह के साथ शिवदत्त जंगली मार्ग से शरश्चंद्रिका राजधानी की ओर त्वरित गति से जाने लगा। अकस्मात् शिवदत्त ने देखा कि पेड़ के तले एक राक्षस ऊँघ रहा है, झपकी ले रहा है। उसे देखकर शिवदत्त स्तंभित रह

गया। किन्तु उसने अपने को संभाल लिया और तेज़ी से वहाँ से दौड़ने ही वाला था कि राक्षस ने आँखें खोलीं। वह चिल्ला उठा "रुक जाओ। तुम मुझसे बचकर नहीं जा सकते। तुम ही सर्वप्रथम व्यक्ति हो, जो मेरे हाथ आये हो।" कहता हुआ वह उठ खड़ा हुआ और शिवदत्त को पकड़कर अपने दायें हाथ से ऊपर उठा दिया।

शिवदत्त ने भय से काँपते हुए उससे कहा "राक्षस। एक पल भर के लिए रुक जाओ और मेरी बात सुनो। मेरा नाम शिवदत्त है। चंद्रसेन महाराज के यहाँ गुप्तचर का काम कर रहा हूँ। शत्रुओं से संबंधित एक मुख्य समाचार महाराज को सुनाने जा रहा हूँ। उसे तक्षण ही महाराज को सुनाना मेरा कर्तव्य है। समाचार सुनाने के बाद मैं तुम्हारे पास आऊँगा और तुम्हारा आहार बनूँगा।"

उसकी बातों पर राक्षस हँस पड़ा और बोला "इस बार मैं छोड़ दूँ तो फिर से तुम थोड़े ही मेरे हाथ लगोगे। मुझे भी बताना कि आख़िर वह समाचार है क्या?"

शिवदत्त ने दृढ़ स्वर में कहा "महाराज के अलावा यह मैं किसी को भी सुना नहीं सकता"। राक्षस ने ज़िद की। उसने कहा "समाचार सुनाने पर ही मैं तुम्हें छोड़ूँगा। अथवा मैं अभी इसी क्षण खा जाऊँगा"।

शिवदत्त ने दृढ़ता से कहा "जो चाहो, कर लो।" उसके इस उत्तर पर राक्षस चकित होता हुआ बोला "मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हुआ। राजा को जो बताना है, बताकर शीघ्र ही लौट आना"।

शिवदत्त ने राक्षस को अपनी कृतज्ञता व्यक्त की। तेज़ी से वह राजा के पास पहुँचा। उसने राजा को वे समस्त विवरण दियें, जिन्हें उसने जाना। राजा ने देखा कि शिवदत्त कहीं जाने की जल्दी में है तो उसने उससे इसका कारण पूछा। शिवदत्त ने राक्षस की बात बतायी और जंगल की ओर निकल पड़ा।

सत्यनिष्ठ तथा राजभक्त शिवदत्त के प्रति राजा में आत्मीमता व प्रेम और बढ़ गये। उसकी अचंचल निष्ठा को देखकर राजा का

रोम-रोम सिहर उठा । उसने मंत्रियों को बुलाया और शासन-संबंधी कुछ विषयों पर चर्चा की । उन्हें आवश्यक आदेश दिये और शिवदत्त की जानकारी के बिना उसके पीछे पीछे गया ।

अपने वचन के अनुसार लौटे शिवदत्त को देखकर राक्षस बहुत ही खुश हुआ । वह कुछ करे, इसके पहले ही राजा चंद्रसेन उसके सामने आ गया और कहा ''राक्षसोत्तम, तुमने शिवदत्त के सत्यव्रत को देखा है ना ? तुमने उसे तब देखा, जब वह मेरे काम पर लगा हुआ था । इसलिए उसकी रक्षा का भार मुझपर है । उसे छोड़ दो और मुझे अपना आहार बनावो ।''

शिवदत्त ने कहा ''महाराज, यह आप क्या कह रहे हैं? मुझ जैसा कोई मामूली मनुष्य मर भी जाए तो उससे नुक़सान केवल उसके परिवार मात्र तक सीमित है । आप जैसे महाराज के मरने से राज्य छिन्नाभिन्न हो जायेगा ।''

चंद्रसेन ने कहा ''शिवदत्त, राज्य के बारे में कोई चिंता नहीं । जैसे ही तुम राजधानी लौटोगे, मंत्रिगण तुम्हारा राज्याभिषेक करेंगे । इसके लिए आवश्यक प्रबंध करके आया हूँ । तुम जैसे राजा के शासन-काल में प्रजा और सुखी व संतुष्ट रह पायेगी''।

उनके वार्तालाप को सुनते हुए राक्षस ने बड़े ही आनंद के साथ कहा ''आज तक मैंने ऐसे ही लोगों को देखा, जो मुझे देखते ही भाग गये । तुम्हारी तरह मरने के लिए आगे आनेवालों को आज तक देखा ही नहीं । अब दोनों मुझे एक बात बताओ । क्या तुम्हें इसका डर नहीं अथवा शंका नहीं होती कि शायद मैं तुम दोनों को खा जाऊँगा ।''

इसपर राजा ने मुस्कुराया और कहा ''तुमने शिवदत्त का विश्वास करके उसे छोड़ दिया । उसीसे मैं जान गया कि तुममें न्याय और अन्याय की परख है । तुम जानते हो कि क्या उचित है और क्या अनुचित । इसीलिए मैं तुम्हारे सम्मुख अकेले ही आया हूँ । अगर मैं इस सत्य से अवगत ना होता तो अपनी असंख्य सेना के साथ आता और तुमसे

लड़ता।"

राक्षस ने कहा "अब तुम दोनों फैसला कर लो कि तुममें से किसको मारकर खा जाऊँ? मैं बहुत ही भूखा हूँ।"

तक्षण ही शिवदत्त ने महाराज से कहा "महाराज, मैं राज्य-भार को संभालने की शक्ति नहीं रखता। यह तो मेरे सामर्थ्य के बाहर है। आप कृपया राज्य लौट जाइये।"

"शिवदत्त राजधानी लौटेगा। उसके नेतृत्व में सेना प्रचंड पर आक्रमण करेगी। शिवदत्त प्रचंड को हरा पायेगा तो वही मेरे राज्य का राजा बनेगा। तब मैं तुम्हारा आहार बनूँगा।" चंद्रसेन ने कहा।

राक्षस ने इस शर्त को मान लिया, उसने शिवदत्त से कहा 'शिवदत्त, तुम चुपचाप यहाँ से चले जाओ और राजा की आज्ञा का पालन करो। जब तक तुम नहीं लौटोगे, तब तक राजा मेरा क़ैदी बनकर यहीं रहेगा।"

राजा के आदेश के अनुसार शिवदत्त राजधानी लौटा। सेना को लेकर प्रचंड पर आक्रमण किया। एक सप्ताह भर की घमासान लड़ाई के बाद प्रचंड को शिवदत्त ने हरा दिया। शत्रु राजा को क़ैद करके उसे जेल में डाल दिया।

इसके बाद शिवदत्त राक्षस के पास लौटा। उसके साथ एक सुन्दर कन्या भी थी। उसे देखकर राक्षस ने पूछा "यह कन्या कौन है?" शिवदत्त ने कहा "लड़ाई में मैंने प्रचंड को हराया। यह कन्या प्रचंड की बेटी मंदाकिनी है। यह हमारे महाराज को हृदयपूर्वक चाहती है। इसने प्रतिज्ञा भी की थी कि विवाह करूँगी तो शरश्चंद्रिका के राजा से ही करूँगी। महाराज पर इस कन्या ने कितनी ही आशाएँ बाँध रखी हैं। इसके मन को दुखाना उचित नहीं; न्याय नहीं। इसलिए महाराज को छोड़ दो और उनके बदले मुझे खा जाओ।"
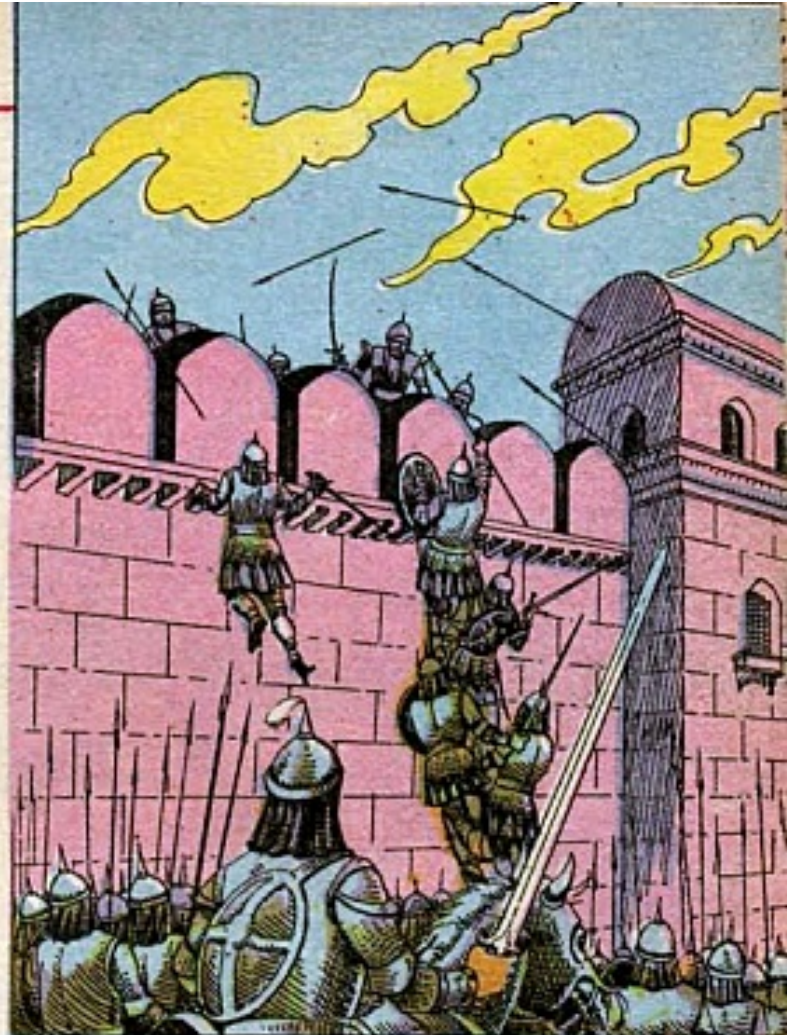
राक्षस ने चंद्रसेन से पूछा "राजन्, अब बोलो, शिवदत्त के प्रस्ताव पर तुम्हें क्या कहना है?"

चंद्रसेन ने अनिच्छापूर्वक कहा "यह युवती मुझे चाहती होगी, लेकिन मेरे इसे

भी वही था। महाराज अपने वचन से मुकरनेवालों में से नहीं हैं। उनके कहे अनुसार तुम शिवदत्त को छोड़ दो और हम दोनों को अपना आहार बनाओ। महाराज के साथ जी तो नहीं सकती, पर मर तो सकती हूँ। इसे ही अपना भाग्य समझूँगी। यह वरदान देकर मुझे धन्य करो।''

राजकुमारी मंदाकिनी की बातें सुनकर राक्षस निस्तेज रह गया। उसने तीनों को एक बार ग़ौर से देखा और कहा ''आज तक तो मैं यही समझता और कहता रहा कि मानव शारीरिक रूप से ही नहीं बल्कि मानसिक रूप से भी कमजोर है। मुझे लगता था कि मानव स्वार्थी है, अन्यों को पीड़ा पहुँचाने में उसे सुख मिलता है, ईर्ष्यालू है, अल्पज़ीवी है, तुच्छ है। दुर्गुणों से मूर्तीभूत प्राणी है। किन्तु तुम तीनों को देखते हुए मैं समझ पाया हूँ कि उसमें अद्भुत सद्गुण भी हैं। उसमें अपने प्रभु के प्रति भक्ति है, अपने भृत्यों के प्रति आदर है, प्रेम और अनुराग हैं। ये गुण उसे उन्नत शिखर पर खड़ा कर देते हैं। मनुष्य दैवांश है। इस सत्य को जानने के बाद भी भला तुम्हीं बताओ, तुममें से किसको मारकर खा जाऊँ? क्या उस शिवदत्त को खा जाऊँ, जो अपने राजा के लिये अपनी कुरबानी देना चाहता है, क्या उस राजा को खा जाऊँ, जो अपने सेवक के लिए अपने प्राणों की बलि चढ़ाना चाहता

चाहने की बात तो दूर, कभी इसको देखा तक नहीं। जिस क्षण शिवदत्त ने प्रचंड को हराया, उसी क्षण से यह शरश्चंद्रिका का राजा है। मंदाकिनी ने प्रतिज्ञा भी की थी कि वह विवाह करेगी तो शरश्चंद्रिका के राजा से ही करेगी। शिवदत्त ही उससे विवाह करेगा तो समस्या का परिष्कार आप ही आप हो जायेगा।'' मेरी शर्त के अनुसार कि विजयी शिवदत्त ही राजा है। इसलिए यह कन्या शिवदत्त की ही धर्मपत्नी बनेगी।

मंदाकिनी ने तक्षण ही राक्षस से कहा ''ऐ राक्षसोत्तम, मैं अपना विवाह शरश्चंद्रिका के राजा से नहीं बल्कि शरश्चंद्रिका के राजा चंद्रसेन से करूँगी। मेरी प्रतिज्ञा का मतलब

है, या उस कन्या को खा जाऊँ जो अपने प्रेमी के लिए जीने से अधिक मरना पसंद करती है। आप तीनों में से मैं किसी को भी खाऊँ, इससे बढ़कर हेय व तुच्छ कार्य नहीं हो सकता। तीनों को सहर्ष छोड़ रहा हूँ।'' कहता हुआ वह राक्षस आकाश में उड़कर अदृश्य हो गया।

बेताल ने यह कहानी सुनायी और कहा, ''राजन, शिवदत्त के व्यवहार के बारे में मेरे मन में कुछ शंकाएँ हैं। अगर वह सचमुच ही राजभक्त होता तो प्रचंड के हाथों हार गया होता। तब राजा चंद्रसेन की शर्त के मुताबिक वह स्वयं राक्षस का आहार बन पाता। परंतु उसने ऐसा नहीं किया। अपनी समस्त शक्तियाँ जुटाकर उसने प्रचंड को युद्ध में हराया। इन परिस्थितियों में राजा को ही राक्षस का आहार बनना पड़ता। राजकुमारी मंदाकिनी इस घटना का पात्र ना बनती तो अवश्य ही शिवदत्त राजा बनता और राजा राक्षस के हाथों मारा जाता। मेरे इन संदेहों का समाधान जानते हुए भी नहीं दोगे तो तुम्हारा सिर फट जाएगा।''

विक्रमार्क ने तब यों कहा ''वीर-शूर, प्रभुभक्ति-परायण कभी भी अपना भला नहीं देखते। वे सदा राज्य का क्षेम चाहते हैं। प्रचंड के हाथों में अगर शिवदत्त हारता तो राज्य की प्रतिष्ठा मिट्टी में मिल जाती। इसीलिए शिवदत्त ने अपनी पूरी शक्ति लगाकर लड़ाई में प्रचंड को हराया। हाँ, यह सच है कि इससे राजा को राक्षस का आहार बनने का ख़तरा है। किन्तु अब तक किये गये राक्षस के सद्व्यवहार को दृष्टि में रखते हुए शिवदत्त को विश्वास हुआ कि राक्षस दयालू है, उचित और अनुचित का फ़रक़ जानता है, क्रूर नहीं है। ऐसे स्वभाववाला केवल अपनी भूख मिटाने के लिए कोई पैशाचिक कृत्य नहीं कर बैठेगा। इसीलिए शिवदत्त ने प्रचंड को हराने में अपनी संपूर्ण शक्ति लगायी। मेरी दृष्टि में तीनों त्यागी हैं।''

इस प्रकार राजा का मौन-भंग करने में बेताल सफल हुआ। वह तक्षण ही शव के साथ अदृश्य हो गया और पुनः पेड़ पर जा बैठा।

आधार-भवानी प्रसाद की रचना

लकड़ी और चमड़े के चप्पल

हेलापुर के एक अस्पताल में उसका रिश्तेतार चिकित्सा करवा रहा था। उसे देखने केशव वहाँ आया। उस अस्पताल में मतिभ्रष्ट लोगों की भी चिकित्सा होती थी।

वहाँ पहुँचने पर केशव को मालूम हुआ कि रिश्तेदार को देखने के लिए उसे एक और घंटा प्रतीक्षा करनी होगी। वह वहाँ की एक बेंच पर बैठ गया। उसपर एक आदमी बैठा हुआ था। बातों ही बातों में उसने उस आदमी को बताया कि उसके रिश्तेदार की मति कैसे भ्रष्ट हो गयी और उससे पूछा ''आप किसके लिए यहाँ आये हैं ?''

उस व्यक्ति ने कहा ''चार-पाँच महीनों से मैं यहाँ चिकित्सा करवा रहा हूँ। डाक्टरों का कहना है कि मेरी भी मति के भ्रष्ट हो जाने के लक्षण हैं।''

केशव को उस व्यक्ति की बातों पर आश्चर्य हुआ। क्योंकि जो भी बातें अब तक उसने कीं, ठीक तरह से कीं। बड़े विनय और संजीदगी के साथ बातें कर रहा है। उसे तो लगा कि इसमें ऐसे कोई लक्षण ही नहीं है। उसने कहा ''आप तो बिल्कुल ठीक लग रहे हैं। बातें भी बहुत ठीक-ठाक कर रहे हैं तो फिर इस अस्पताल में चिकित्सा क्यों करवा रहे हैं?''

वह व्यक्ति उसकी बातों पर थोड़ा-सा मुस्कुराया और बोला ''यहाँ के डाक्टर लंबे अर्से से मतिभ्रष्ट लोगों की चिकित्सा कर रहे हैं। मुझे संदेह हो रहा है कि कहीं इन डाक्टरों की भी मति भ्रष्ट तो नहीं हो गयी ? मुझे तो लकड़ी के चप्पलों से चमड़े के ही चप्पल अधिक पसंद हैं। आपको ?''

केशव ने कहा ''मैं तो चमड़ी के चप्पल पसंद करता हूँ।'' ''तो क्या आप उन्हें उबालकर खाते हैं या तलकर।'' उस व्यक्ति के प्रश्न में उतावलापन था। उस व्यक्ति के प्रश्न से केशव का सिर चक्कर खा गया। वह वहाँ से भागा।

\- सुरेंद्र यादव
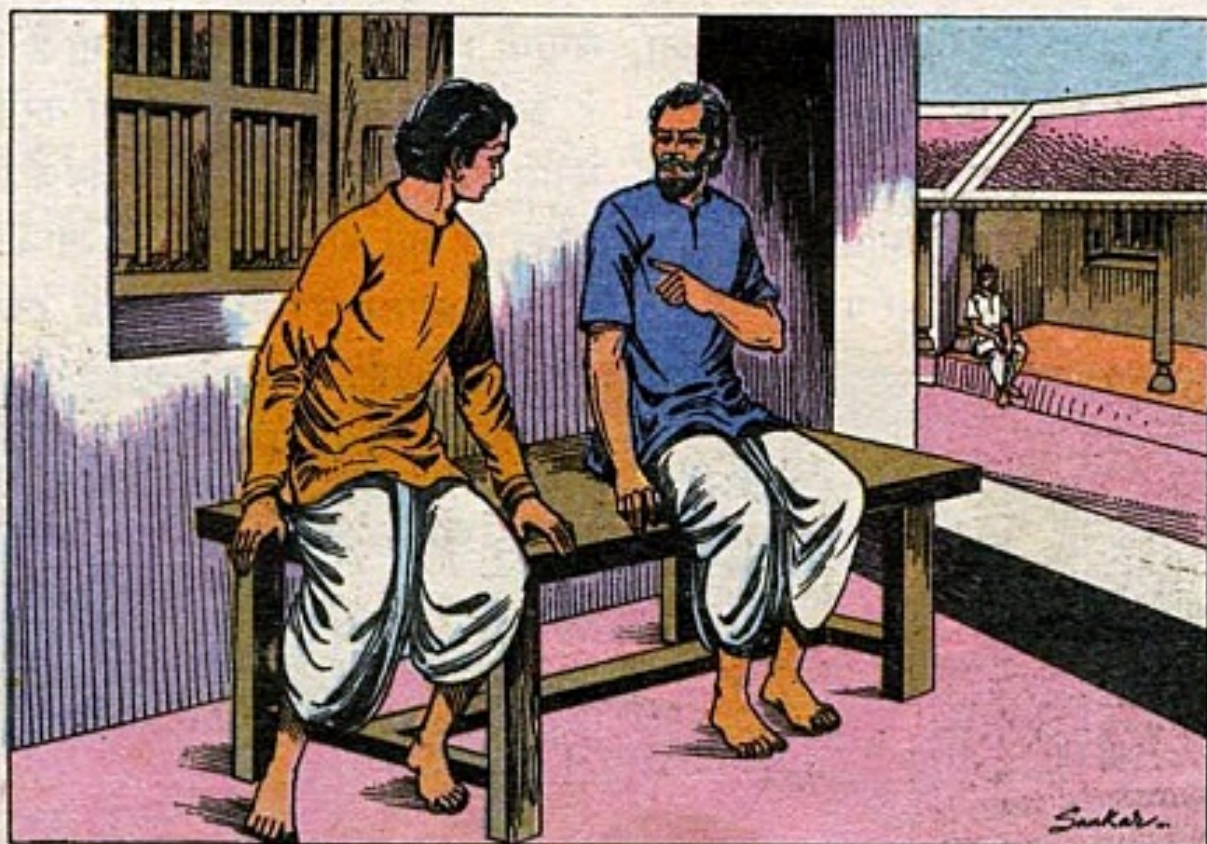
हमारे देश के क़िले -४

चमकते हुए रेगिस्तान के रेत के बीच पीले रंग के चूने की दीवारों से निर्मित है जयसलमेर का क़िला। उदितसूर्य की किरणें जब इस क़िले पर पड़ती हैं, तब यह क़िला सुवर्णरंग के क़िले की तरह अत्यंत शोभायवान दीखता है। और यह शोभा देखते ही बनती है।

११५६ में भाटी राजा रावल जैसाल देव ने इस क़िले का निर्माण किया। इस क़िले की विशिष्टता इसकी जुड़वाँ चहार दीवारियाँ हैं। बाहर की तथा अंदर की दीवार को देखने पर लगेगा कि आधी ऊँचाई से मानों कपड़े को तह करके रखा गया हो। स्थानीय लोग इसे कमरकोट और पादा कहकर पुकारते हैं।

इस किले ने कितने ही युद्धों को देखा है। दिल्ली सुल्तान बाल्बन ने सुदीर्घ काल तक इसे घेरे रखा। यह घेराव १२७६ से १२८३ तक रहा।
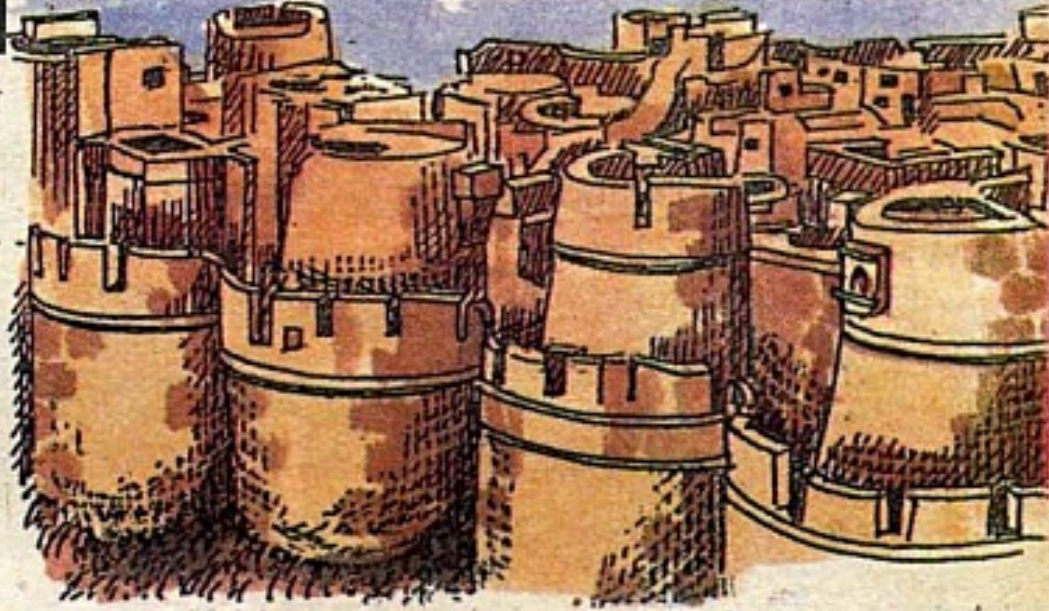
जयसलमेर किला

राजपूतों के क़िले -२

रचना : मीरा उग्रा चित्र : सुलभा ठाकुर

जयलसमेर व्यापार और वाणिज्य का केंद्र रहा। अफ़गनिस्तान, सिरिया, इरान, इराक, ईजप्ट आदि देशों को जानेवाले व्यापारी इस नगर से आया-जाया करते थे। १५७० में भाटियों और अकबर के बीच मैत्री संबंध स्थापित हुए। तब से व्यापार तीव्र गति से होने लगा। यहाँ जैन व्यापारियों ने मंदिरों तथा हवेलियों का निर्माण दिया। शिलाफलकों से निर्मित झरोखे, पक्की छतों तथा कुड्य चित्रों के लिए यह बहुत ही प्रसिद्ध था।

जयसलामेर के झरोखे,

शिलाफलक

राजस्थान के अन्य क़िलों से तुलना करने पर बीकानेर का जुनागढ़ क़िला नया कहा जा सकता है। यह १५९४ में बना। इसका परिरक्षण बहुत ही अच्छी तरह से हुआ है। भवनों के अंदर शिलाओं से बनी जो खिडकियाँ हैं, और कुड्य् चित्र हैं, वे बहुत ही सुंदर हैं। झरोखों के शिलाफलक बाहर से आती हुई गरम हवा को रोकते हैं और ठंडा रखते हैं।

जयपुर के समीप केअंबरगढ़ क़िले का निर्माण कच्छावाहा शासकों ने किया। यह सुंदर भवनों के लिए सुप्रसिद्ध है।

जुनागढ़ क़िला

बीकानेर राजभवन के अंदर के भाग

यहीं जयगढ़, नाहरगढ़ नामक दो क़िलों का निर्माण भी हुआ। इन तीनों को ना ही कभी घेरा गया या ना ही यहाँ युद्ध हुआ।

जयगढ़ के क़िले का निर्माण 'चील्वा' पहाड़ पर हुआ। इस क़िले में तोपों को बनाने का कारख़ाना है। अंबरकोट से इस क़िले तक एक रहस्य सुरंग मार्ग भी है। इस क़िले के अंदर के कमरों में राजपरिवार की निधियाँ छिपायी जाती थीं। इन पहाड़ी प्रांतों की मीना जातिवाले इनकी रखवाली करते थे। आवश्यता पड़ने पर राजा स्वयं वहाँ जाते और धन ले आते रहते थे। तब भी मीना जाति का रखवाला राजा की आँखों में पट्टी बाँधता था और उस कक्ष में ले जाता था, जहाँ धन-राशि सुरक्षित है। राजा उतना ही धन ले आता था, जितना जरूरी है। जैवान तोप बहुत भी भारी तोप है। यह हमारे देश के तोपों में से अत्यधिक भारी तोप है। यह तोप भी जयगढ़ में ही है। एक ही बार इसकी परीक्षा की गयी।

जयगढ़ क़िला
पर्यवेक्षण शिखर

१७३२ में सूरजमल नामक जाट राजा ने लोहगढ़ क़िले का निर्माण किया। यह क़िला भरतपूर के पुराने क़िले पर ही बनाया गया। यद्यपि इस क़िले की चहार दीवारियाँ मिट्टी से ही बनी हैं; किन्तु वे तोपों के सामने दृढ़ता से टिक पायीं।

१८२५ नवंबर में ईस्ट इंडिया कंपनी के २७,००० सैनिकों ने इस क़िले को घेरा।

६४,४४६ तोपों की गोलियों को दागने के बाद भी कोई प्रयोजन नहीं रहा। तब उन्होंने उत्तरी दिशा की दीवार को तोपों की गोलियों से गिराया। इस विध्वंस के लिए २०,००० पौंड

जैवान
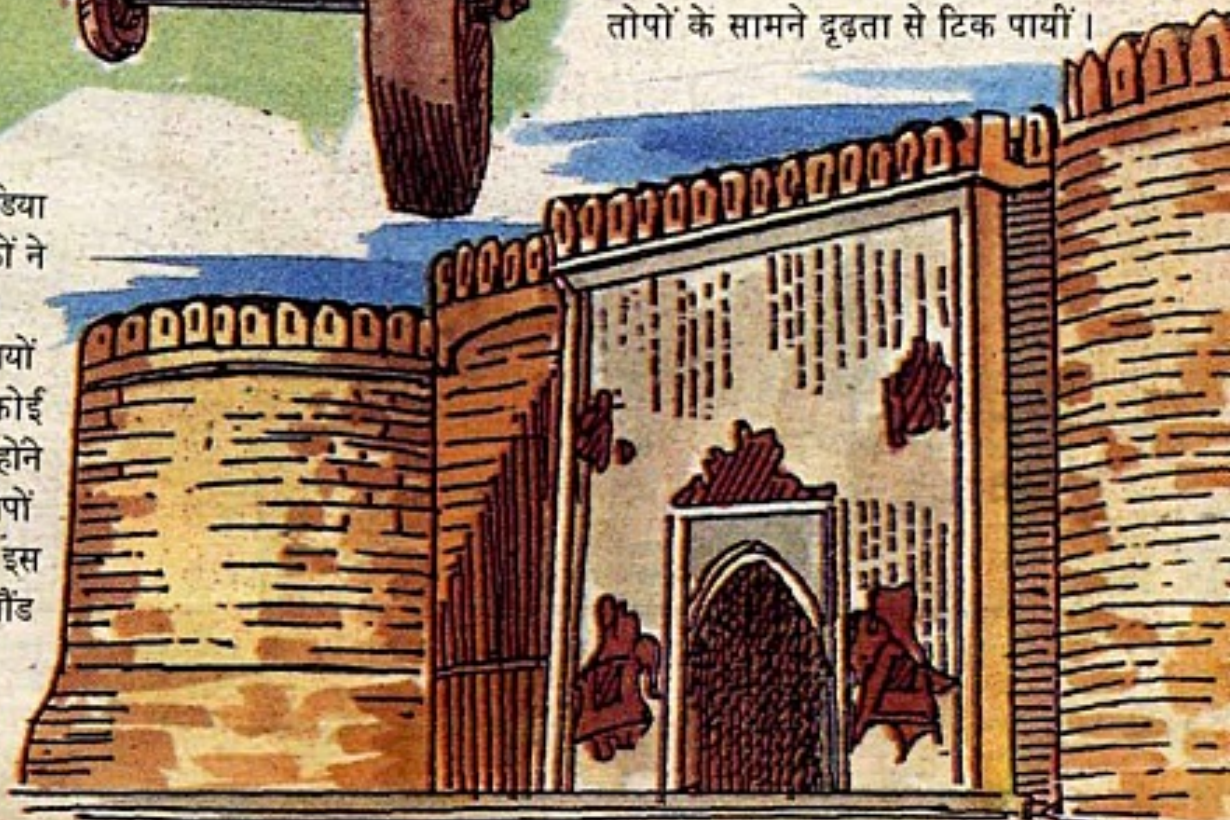
विस्फोटक पदार्थ को इस्तेमाल में ले आये। इस विस्फोट की ध्वनि आगरा तक सुनायी पड़ी। १८२६, जनवरी १८ को भरतपुर का पतन हुआ।

१८४१ में देवसिंग नामक एक हाडा नायक ने मीना जाति के प्रधान बूंदू को हराया। उसने हाडौती राज्य की स्थापना की, जिसकी राजधानी थी बूंदि। उसके पोते के बेटे राववारसिंग ने १३५२ में तारागढ़ नामक एक किले का निर्माण किया। उसके वंशजों ने छह सौ सालों तक इस राज्य पर निरांटक शासन किया।

हाडा सैनिकों की वीरता के बारे में अनगिनत कहानियां प्रचलित हैं। एक बार उदयपुर राजा राणालखा ने प्रतिज्ञा की थी कि जब तक बुंदि क़िले को अपने अधीन नहीं करूंगा तब तक ना ही पानी पीऊंगा, ना ही खाऊंगा। जब उसका स्वास्थ्य क्षीण होता जा रहा था तब उसके सेनापतियों ने एक नक़ली क़िला बनवाया और राजा से कहा कि इस पर विजय पाइये। नक़ली किले का प्रहरी था कुंभ हाडा नामक एक सैनिक। उसे आदेश दिया गया कि राणा के आते ही वह अपनी हार मान ले। थोड़े-से सैनिकों को लेकर राणा ने नक़ली क़िले पर धावा बोल दिया। नकली क़िले से बाणों की बौछार होने लगी। क्रोध तथा आश्चर्य पूरित सैनिक क़िले में घुस आये तो प्रहरी कुंभ हाडा ने तलवार चलायी और सैनिकों से कहा "क़िला नक़ली हो सकता है, लेकिन हाड़ा असली सैनिक है। जब तक जान है, तब तक इस बुंदि को गिरने नहीं दूंगा।" हुंकार भरते हुए उसने कहा। अपनी आंखों देखी इस घटना से राजा के मन में परिवर्तन हुआ और उसने बुंदि को जीतने के प्रयत्न को त्याग दिया।

नक़ली घेराव

'रागमाला' 'बारामसा' जैसे छोटे-छोटे चित्रों के लिए प्रसिद्ध कितने ही चित्रकार बुंदि क़िले में रहा करते थे।

तारागढ़ क़िला
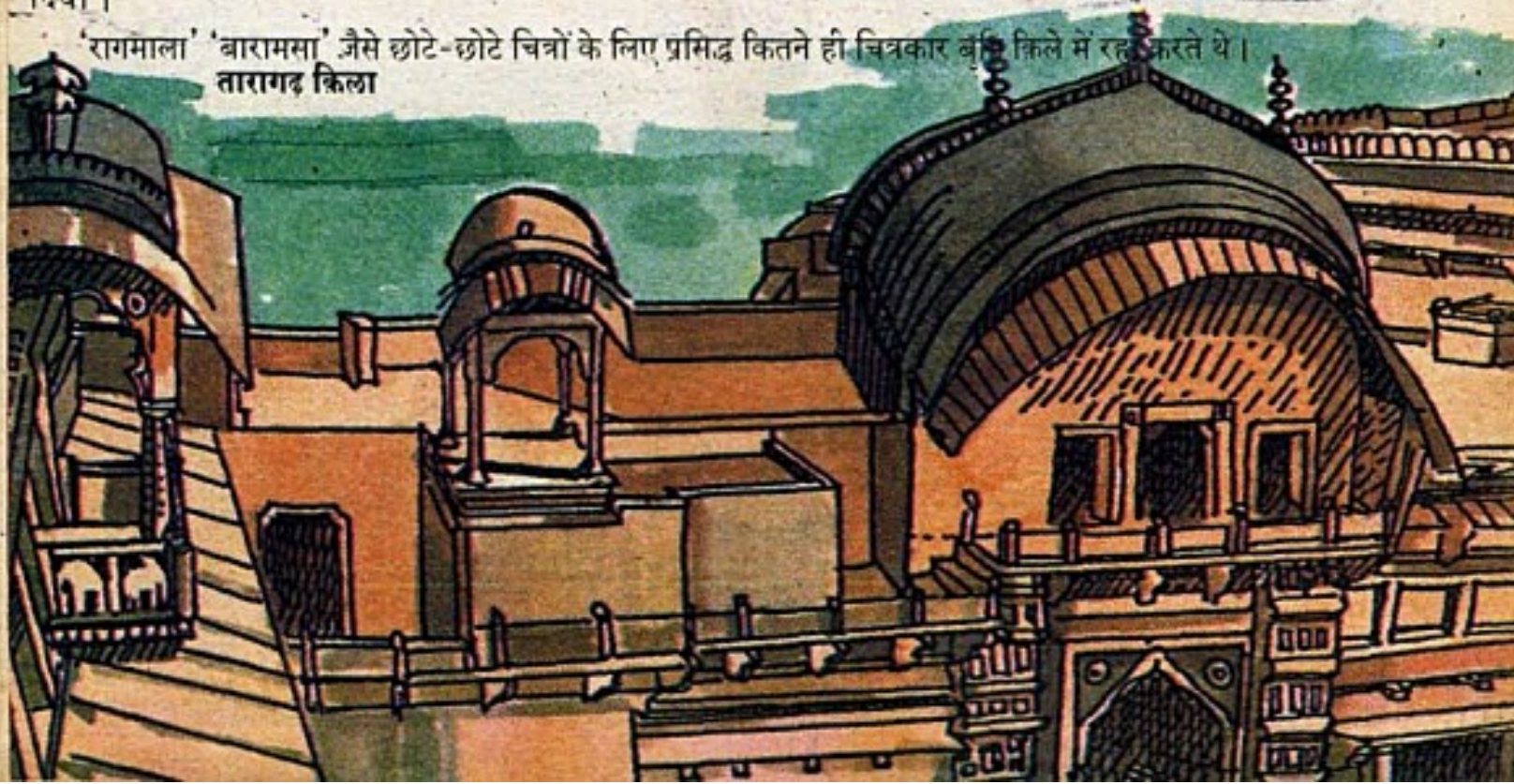
प्रीतू के भूत

भद्रपुर का प्रीतू भूतों का मशहूर मांत्रिक था। सबों का विश्वास था कि उसका नाम लेने मात्र से भूत-प्रेत गाँव की सरहदों से दूर भागते हैं। उसकी पत्नी अन्नपूर्णा बड़ी ही नेक औरत थी। किन्तु उसके पति प्रीतू का स्वभाव उसके स्वभाव से बिल्कुल ही विरुद्ध था।

एक दिन शाम को चार लोग उनके घर आये। वे अन्नपूर्णा के दूर के रिश्तेदार थे। उन्होंने कहा 'अन्नपूर्णा, हम बहुत दूर से पैदल चले आ रहे हैं। हमें और बहुत दूर जाना भी है। एकदम थक गये हैं। आज रात को हमारे खाने का इंतज़ाम करोगी तो बड़ा उपकार होगा। खाकर हम लोग फ़ौरन यहाँ से चल देंगे।'' अन्नपूर्णा ने कहा ''अवश्य, आप लोग थोड़ी देर तक चबूतरे पर विश्राम कीजिये। इतने में खाना बना दूँगी।'' वह रसोई बनाने के काम में जुट गयी।

उस समय उसका पति प्रीतू चार कोस की दूरी के एक गाँव में किसी आदमी पर सवार भूत को उतारने के लिए गया हुआ था। अन्नपूर्णा ने सोचा कि उसके लौटने के पहले ही अतिथियों को खाना खिला दूँ और उन्हें बिदा करूँ। यही सोचकर उसने उन्हें रुकने को कहा। वह जानती थी कि अगर उसका पति जल्दी ही आ जाए और देख ले कि चार व्यक्ति उसके घर में भोजन कर रहे हैं तो उपद्रव मच जायेगा। उसका पति निस्संदेह ही उन्हें मार भगायेगा।

इसी कारण अन्नपूर्णा ने जल्दी-जल्दी में रसोई बनायी और अतिथियों को खाना परोसा। दरवाज़ा भी बंद कर दिया। फिर भी उसे डर था कि कहीं उसका पति अचानक कूद ना पड़े। इसलिए खिड़की से वह झाँकने लगी। वह आँखें फाड़-फाड़कर देखती रही कि कहीं उसका पति आ तो नहीं रहा है।

शंकर

और कठोर है। आप लोगों को खाना खाते हुए देख लिया तो आपकी ओर मेरी ख़ैर नहीं। अपनी छड़ी से हमारी पूजा करेंगे। मैं पिछवाड़े में जा रही हूँ। मेरे पति ने दरवाज़ा खटखटाया भी तो जब तक आप लोग खा ना लें, तब तक दरवाज़ा मत खोलिये। फिर इस दीप को बुझा दीजिये और दरवाज़ा खोलकर तेजी से भाग जाइये। अमावास का अंधकार हैं। भागते समय सावधानी बरतिये।'' कहकर वह पिछवाड़े में चली गयी।

प्रीतू दरवाज़ा खटखटाता रहा, फिर भी दरवाज़ा नहीं खुला तो प्रीतू चिल्ला पड़ा ''अरी ओ अन्नपूर्णा, दरवाज़ा खोलो''। वह फिर ज़ोर-ज़ोर से दरवाजा खटखटाता रहा।

अतिथि बहुत ही भूखे थे, इसलिए वे खाने में मस्त थे।

गली में कुत्ते भोंकने लगे। अन्नपूर्णा की शंका सच निकली। गली में प्रवेश करते ही प्रीतू ने तांबे की अपनी छडी से कुत्ते को ज़ोर से मारा और ज़ोर से चिल्ला पड़ा ''गाँव के ये कुत्ते क्या जानें, भूतों के इस प्रीतू की मंत्र-शक्ति को।''

अतिथियों का भोजन समाप्त होने जा रहा था। अन्नपूर्णा ने खिड़कियाँ जल्दी से बंद कर दीं और उनसे कहा ''महाशय, आप लोग जल्दी-जल्दी खा लीजिये। मेरा पति आने ही वाला है। मैं, भूत-प्रेत और ये गाँववाले ही जानते हैं कि उनका स्वभाव कितना कडुवा

दूसरे ही क्षण दरवाज़ा खुला। घर के अंदर अंधेरा ही अंधेरा था। उस अंधकार से चार आकार तेज़ी से आगे आये और प्रीतू को नीचे गिराकर उसपर से होते हुए, उसे रौंदते हुए अंधकार में भागते हुए गये।

''हाय, हाय, मर गया'' कहकर प्रीतू चिल्लाता रहा और अपने ही आप बड़बड़ाने लगा ''ये मनुष्य हैं या भूत?'' दर्द की वजह से वह उठ भी नहीं पा रहा था। उसे संदेह होने लगा कि कहीं पैर तो टूट नहीं गया ? वह चिल्लाता रहा ''अरी ओ मेरी धर्मपत्नी, कहाँ मर गयी तू।''

''आयी,'' कहती हुई अन्नपूर्णा पिछवाड़े से अंदर आयी। उसने दीप जलाया और पति

के पास आकर बोली "आपने अपनी ऐसी क्या हालत बना रखी है ? कपड़ों पर लौकी की तरकारी के धब्बे हैं, सिर पर फटा पत्ता है। हाँ, अवश्य ही यह इन्हीं का काम है।"

दर्द से कराहता हुआ प्रीतू धीरे-धीरे उठा और कहता हुआ अंदर आया कि किनकी बात कर रहे हो ? यह काम किनका है ? उसने अंदर आकर देखा कि ज़मीन पर चावल व तरकारियाँ तितर-बितर पड़ी हुई हैं। वह गुर्राता हुआ बोला "मेरी अनुपस्थिति में ऐरे-ग़ैरों को बिठाकर खाना खिला रही थी, भोज दे रही थी ?" वह क्रोध से काँपने लगा।

अन्नपूर्णा ने अपने हाथ में पकड़े हुए दीप को पाटे पर रखा और कहा "जो चाहें, कह लीजिये। मालूम नहीं, सबेरे-सबेरे किस पुण्यात्मा के दर्शन हुए। मेरा सुहाग बच गया। मेरी माँग का सिंदूर सुरक्षित रहा।"

"क्या बक रही हो ? मैं क्या पूछ रहा हूँ और तुम क्या जवाब दे रही हो। दोनों का क्या कोई संबंध है ?" वह गुस्से से बोल तो गया, किन्तु उसमें कोई संदेह जगा तो उसने अपनी आवाज़ धीमी कर दी।

अन्नपूर्णा अपने आँसुओं को दामन से पोंछती हुई बोली "अब पछताने से क्या होगा? आप भूतवैद्य ना बनते और खेती या व्यापार करते तो कितना अच्छा होता।" प्रीतू ने बीच ही में उसे रोका और कहा "क्या बक रही हो ? तुम पर कहीं कोई भूत तो सवार नहीं हुआ?"
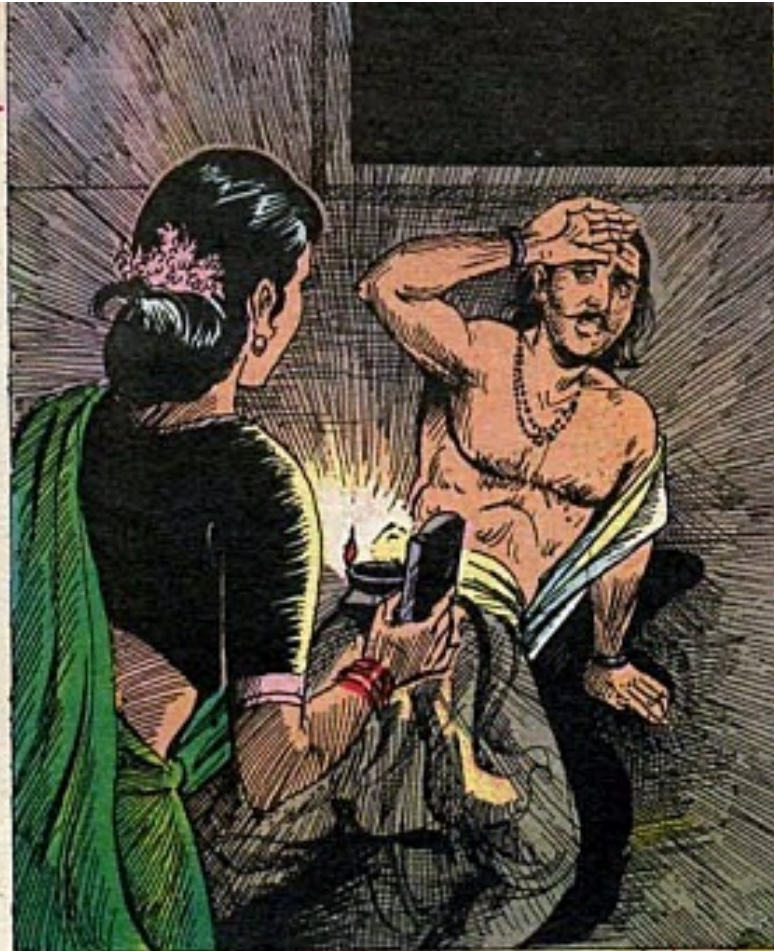
"यह तो एक ना एक दिन होकर ही रहेगा। परंतु सुनिये तो सही कि आज क्या हुआ है। आप चले गये पड़ोस के गाँव में भूत उतारने।

आपने वहाँ उन भूतों को भगा दिया। लेकिन वे भूत सीधे यहाँ आ गये। उन्होंने तो मुझे बहुत-सी गालियाँ दीं और मुझसे कहा "अरी ओ भूतों के राजा प्रीतू की धर्मपत्नी, हम अपनी असमाप्त इच्छाओं की पूर्ति करने के लिए किसी पर हावी हो जाते हैं, पेट भर खाने के लिए किसी पर सवार हो जाते हैं। और तुम्हारा पति? वह अपने मंत्रों का प्रयोग हमपर कर रहा है और हमें भगा रहा है।

हमारी इच्छाओं को फलीभूत होने में विघ्न डाल रहा है। तुम भी देखती जाओ। तुम्हारा पति जब लौटेगा, तो उसका हम क्या हाल करेंगे। फटे ताल-पत्र और कीड़ों से भरे नीम के पत्तों को जैसे हो वह नीचे रखेगा, हम उसपर टूट पड़ेंगे और उसे नोच-नोचकर खा जायेंगे। तभी हमारी भूख मिटेगी। कहकर उन भूतों ने घर में आसन जमा लिया।'' अन्नपूर्णा एक ही साँस में पूरा बोल गयी।

प्रीतू ने अपनी छड़ी ली और कहने लगा ''वे हैं कहाँ, बोलो'' वह किसी मंत्र को पढ़ने ही वाला था कि अन्नपूर्णा ने उसे रोका और कहा ''ठहर जाइये, मुझे बात ख़तम करने दीजिये। उन भूतों को देखते हुए मुझे लगा कि वे भूख से तड़प रहे हैं। मुझे लगा कि वे अवश्य ही अपना कहा करके दिखायेंगे। मैंने देग भर का चावल और टोकरी भर की तरकारियाँ पकायीं और उनके सामने उंडेल दिया। जब वे तृप्ति से खा रहे थे तो मैंने उनसे प्रार्थना की कि मेरी पति को क्षमा कर दीजिये। सबने अपना - अपना सिर हिलाकर स्वीकृति तो दे दी, लेकिन उनमें से एक लंगडे और तिरछी नज़रवाले भूत ने तो कहा ''तुम्हारे पति को मैं छोड़नेवाला नहीं हूँ। उसे आग पर सुलगाकर उसकी बोटी-बोटी खा जाऊँगा। मैंने ऐसा नहीं किया तो रामपुर का रंगा ही नहीं हूँ।'' कहता हुआ वह एक ही पैर पर खड़ा हो गया और क्रोध से छलोंगें मारने लगा। उसे देखते हुए मैं काँप गयी। मन ही मन आपकी सुरक्षा की प्रार्थना करने लगी। इतने में आप आ गये। मुझपर उन्हें शायद दया आ गयी होगी, या आपसे डर गये होंगे, बस, भाग गये''।

प्रीतू काँपता हुआ बोला ''अच्छा। उन भूतों में रंगा भी था। तब तो मैं बाल-बाल बच गया। मैं मिल जाता तो सचमुच मेरी बोटी-बोटी खा जाता।'' कहता हुआ वह मंत्रोच्चारण करने लगा और पूजागृह में घुसकर दरवाज़ा बंद कर लिया।

पति के अंदर जाते ही अन्नपूर्णा ने तृप्ति भरी लंबी सांस खींची और उन भूतों से क्षमा माँगी, जिन्हें इसके पहले उसने गालियाँ दी।
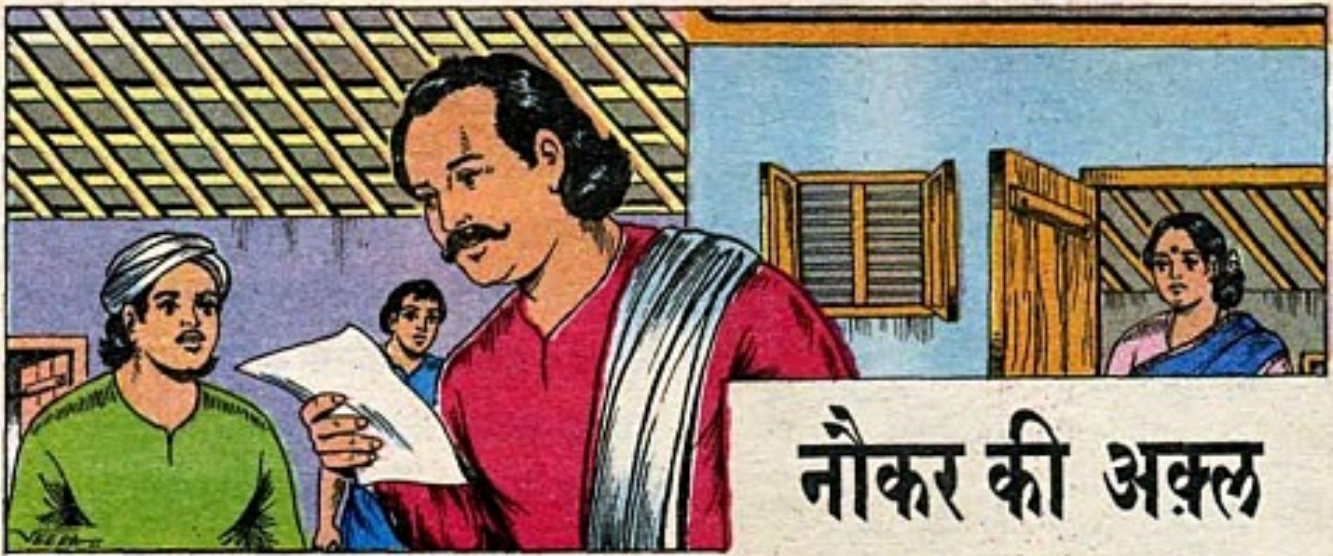
नौकर की अक़्ल

चौराहापुर गाँव के भूपति को एक नौकर की ज़रूरत आ पड़ी। उसने अपने दोस्त किशोर से अपनी ज़रूरत बतायी।

किशोर ने बताया "मेरे यहां दो नौकर हैं। विश्वासपात्र हैं। दोनों बहुत ही अच्छे स्वभाव के भी हैं। परंतु उनमें से एक अक़्लमंद है। काम पर अधिक मन नहीं लगाता, पर अधिक वेतन की माँग करता है। दूसरा बुद्धू है। जी-जान लगाकर काम करता है और वेतन भी कम माँगता है। अब तुम्हीं बताओ, इनमें से किसको भेजूँ?"

"यजमान अक़्लमंद हो तो नौकर बुद्धू भी हो तो काम चला सकते हैं। काम में मन लगाये, ईमानदार हो तो बस यही बहुत है। तुम तो कह रहे हो कि अधिक वेतन की माँग भी नहीं करता, इसलिए दूसरे ही को भेजो" भूपति ने कहा।

यों शंकर भूपति के यहाँ नौकरी करने आया। एक महीना भर उससे काम कराने के बाद भूपति संतुष्ट हुआ। भूपति की बेटी शहर में रहती थी। उसने एक बार अपने पिता को ख़त एक नौकर के द्वारा भेजा। "हमारी ननद की शादी मुक़र्रर हुई है। वरवाले चाहते हैं कि दो बजनी रंगवाली साड़ियाँ उन्हें दी जाएँ। अगले शनिवार तक वे हमें मिल जानी चाहिये। विलंब ना हो।"

चिट्ठी लानेवाले ने भूपति से कहा "महाशय, आज शाम को ही मैं शहर लौट रहा हूँ। साड़ियाँ मुझे दे सकें तो स्वयं ले जाऊँगा।"

भूपति ने मंगू दादा को ख़बर भेजी तो मालूम हुआ कि बजनी रंग की साड़ियाँ उसके पास नहीं हैं। रंग पोतने के लिए कम से कम दो दिन लगेंगे। बुधवार था उस दिन। भूपति ने उस आदमी से कहा "बिटिया से बताना कि शनिवार तक साड़ियाँ भेजूँगा।" भूपति ने शंकर को बुलाया और पूरी बात बतायी और कहा "शनिवार तक तुम्हें शहर पहुँचना है और मेरी बेटी से मिलना है। याद रखो।"

खुशबू .आर

सावधानी से इन्हें शहर ले जाना।''

शंकर ने साड़ियाँ लीं और कहा ''इनपर पानी की एक बूँद भी गिरने नहीं दूँगा। मैं तो अपने वचन का पक्का हूँ। आपने जब मुझे काम सौंपा तो उस काम को ठीक तरह से करना मेरा फ़र्ज़ है। इस फ़र्ज़ को मैं बखूबी निभाऊँगा। भोजन करके रवाना हो जाऊँगा।'' कहकर मालिक से बिदा लेकर वह चला गया।

इसके बाद भूपति और उसकी पत्नी अपनी बेटी के बारे में आपस में बातें करने लगे। भूपति की पत्नी ने कहा ''ननद की शादी पर वरवाले जैसी साड़ियाँ चाहते थे, वैसी साड़ियाँ हमारी बेटी देनेवाली है। अवश्य ही ससुराल में हमारी बेटी की भरपूर प्रशंसा होगी।''
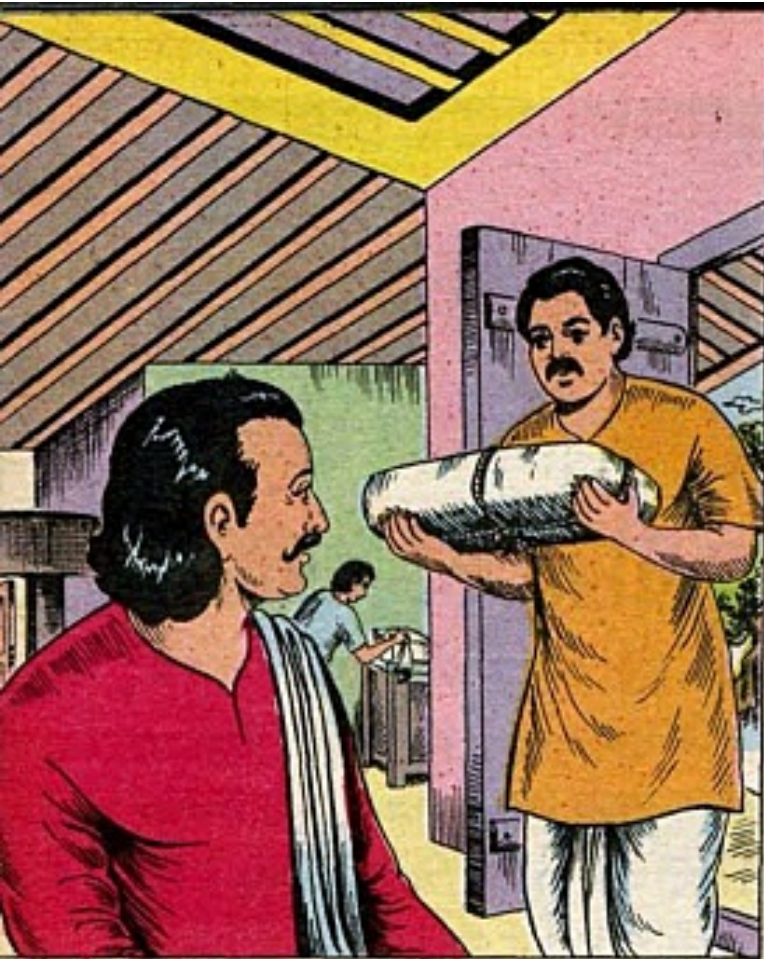
''तो शुक्रवार की रात को ही मुझे यहाँ से निकलना होगा। आप बेफ़िक्र रहिये। मैं शनिवार तक पहुँच जाऊँगा'' शंकर ने कहा।

शुक्रवार के दिन वर्षा होने लगी। सबेरे से लेकर शाम तक मूसलधार वर्षा होती रही। वर्षा के थम जाने के बाद मंगू दादा साड़ियाँ भूपति के यहाँ ले आया। उसने कहा ''साहब, साड़ियाँ को रंग से पोत दिया है। अभी पूरी तरह से सूखी नहीं हैं। बड़ी सावधानी से बाँध दिया है। एक और दिन तक इनपर पानी ना गिरे। सावधानी बरतियेगा।'' कहकर वह चला गया।

भूपति ने फ़ौरन शंकर को बुलाया और कहा ''इन साड़ियों पर पानी ना गिरे। अगर पानी गिरा तो रंग बदल जायेगा। इसलिए

''अच्छा हुआ, समय पर शंकर जैसा ईमानदार नौकर हमारे काम आया। अगर वह नहीं होता तो शनिवार के सबेरे ही मैं निकल पाता। आजकल सफ़र करना मेरे बस की बात नहीं रही, मुझे चिढ़ हो गयी है'' भूपति ने कहा।

पड़ोसी के घर में थोड़ी हलचल-सी मच गयी थी, तो पति-पत्नी दोनों वहाँ गये। भूपति के दोस्त राजा के पिता को दिल का दौरा पड़ा। वैद्य ने परीक्षा की और कहा ''मेरे पास सही दवाएँ नहीं है। फौरन शहर से मंगाइये या इन्हें वहाँ ले जाइये।''

शहर में भूपति के बहुत-से परिचित लोग हैं। बेटी भी वहीं रहती है। वह भी राजू के साथ

चलने तैयार हो गया। तुरंत गाड़ी का इंतज़ाम किया गया और राजू का पूरा परिवार शहर निकला। भूपति भी उनके साथ निकल पड़ा। जाते-जाते उसने शंकर के घर पर गाड़ी रुकवा दी। घर के मालिक ने कहा कि वह निकल चुका है। भूपति ने मन ही मन सोचा "मैं तो स्वयं शहर जाने निकला हूँ। अच्छा होता, शंकर थोड़ी और देर ठहर जाता।"

अब शंकर से मिलने की कोई गुँजाइश नहीं। उसका रास्ता अलग है और गाड़ी के जाने का रास्ता अलग। गाड़ी जल्दी ही शहर पहुँच गयी। भूपति ने राजू के पिता की परीक्षा एक अच्छे डाक्टर से करवायी। डाक्टर ने कहा कि घबराने की कोई बात नहीं, परंतु रोगी को दो दिनों तक मेरे ही पास रखना होगा। जब इसका इंतज़ाम हो गया तो भूपति अपनी बेटी के घर गया।

अपने पिता को देखकर बहुत ही खुश होती हुई उसने कहा "पिताजी, आपने इतना कष्ट क्यों उठाया? किसी नौकर से भिजवाते।"

तब उसके ससुर ने बहू की बातों पर दुख प्रकट करते हुए कहा "बहू, ऐसा क्यों कह रही हो? इस शुभ मुहूर्त पर इनका आना हमारा भाग्य है। अच्छा हुआ, ये आ गये।"

भूपति ने पूरी बात बेटी से कही और कहा "तो शंकर अब तक पहुँचा नहीं है। पैदल आ रहा है, थोड़ी देर में पहुँच जायेगा। जब आ ही गया हूँ तो विवाह भी देखके जाऊँगा।"
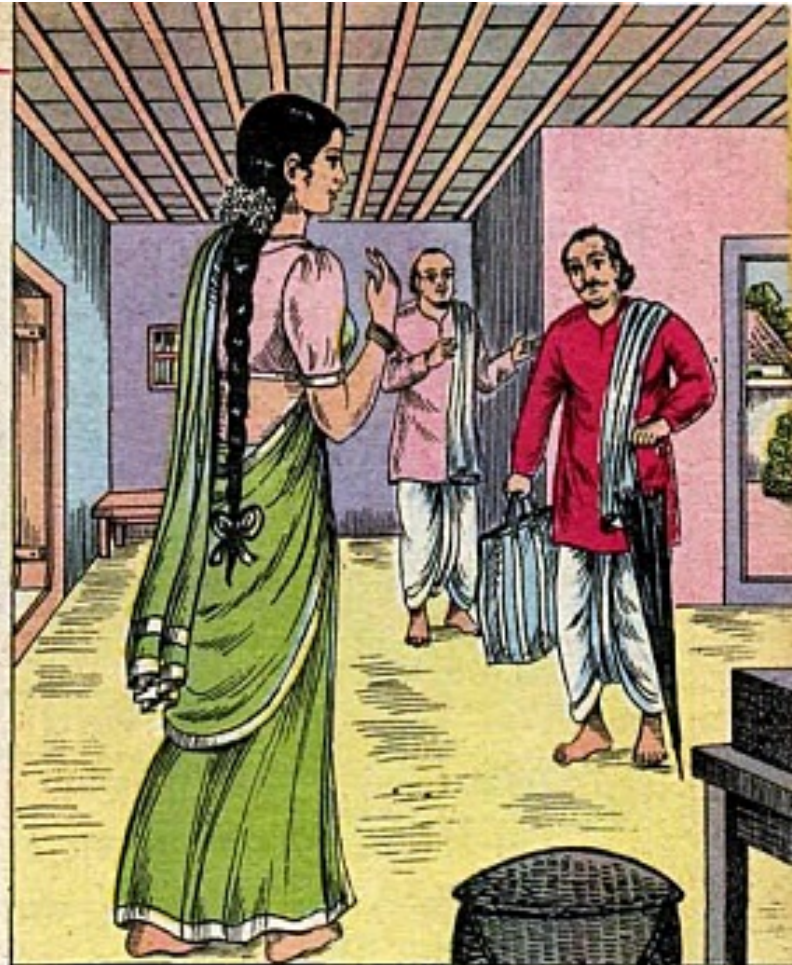
थोड़ी देर बाद शंकर पहुँच गया। वह वर्षा में खूब भींग गया था। भूपति ने उससे कहा "बारिश हो रही थी, थोड़ी देर रुक जाते तो अच्छा होता। तुम्हें शहर आने की ज़रूरत नहीं पड़ती। मैं ही खुद साड़ियाँ ले आता।"

"मालिक, मैंने कहा था ना कि मैं अपने वचन का पक्का हूँ। आपके आदेश के अनुसार शनिवार को मुझे शहर पहुँचना है, छोटी मालकिन से मिलना है। यह काम करने से बारिश या तूफान भी मुझे रोक नहीं सकते।" शंकर ने गर्व से कहा।

भूपति ने संदेह-भरी आवाज़ में पूछा "अच्छा हुआ, आ गये। मंगूदादा ने बार-बार कहा था कि साड़ियों पर पानी गिरना नहीं

चाहिये। याद है ना?"

"आप कहें और मैं ना करूँ। थोड़े ही मैं साड़ियों को पानी में भीगने दूँगा। एक बूँद भी उनपर गिरने नहीं दी। बड़ी सावधानी से महफ़ूज़ रखा है।" शंकर ने कहा।

भूपति ने आश्चर्य प्रकट करते हुए पूछा "यह कैसे संभव हो पाया ?" "अक़्ल हो तो क्या संभव नहीं होगा ? जब मैं निकला तब बूँदाबाँदी हो रही थी। दोनों साड़ियों को टिन की एक संदूक में रखा और संदूक बंद कर दी।"

"संदूक है कहाँ?" भूपति ने पूछा।

"टिन की संदूक बारिश में भीग जाए तो हो सकता है, किसी छेद में से पानी अंदर चला जाए, इसलिए संदूक को घर में ही पलंग के नीचे रखकर आया हूँ," शंकर ने कहा।

उसकी बातें सुनकर घरवाले एकदम हँस पड़े। भूपति बहुत ही लज्जित हुआ। वह तुरंत एक गाड़ी में गाँव गया और साड़ियाँ लेकर वापस आया। अच्छा हुआ, वह ठीक मुहूर्त के समय पर पहुँच पाया।

घर लौटते ही उसने किशोर को बुलाकर कहा "पहले ही तुमने मुझे आगाह किया था। मुझसे साफ़-साफ़ इसके बारे में कह दिया। हाँ शंकर ईमानदार है, काम जी-जान से करता है, पर है बहुत ही बुद्धू। फिर भी मैं उसे नौकरी से निकालना नहीं चाहता। उसे ऐसे ही काम सौंपूँगा, जहाँ अक़्ल के उपयोग की ज़रूरत नहीं पड़ती। पशुओं की देखभाल करना, पेड-पौधों को पानी देना आदि कामों पर आगे से उसे लगाऊँगा। उस अक़्लमंद नौकर को भेजो, जो अधिक वेतन की मांग कर रहा है। ऐसे अक़्लमंदों से काम अच्छी तरह से होते हैं और समय पर होते हैं।"

किशोर ने भूपति के कहे अनुसार उस अक़्लमंद नौकर को उसके यहाँ भेजा। हम कभी-कभी पैसों की लालच में ग़लतियाँ कर बैठते हैं। शंकर से जो ग़लती हुई, वह मामूली ग़लती थी। अगर अनजाने में उससे बडी ग़लती हो जाती तो मुमकिन है, बहुत नुक़सान पहुँचे। अक़्लमंदों की हमेशा इज़्ज़त करनी चाहिए। उनको जितना वेतन देना चाहिये, दे दें तो वे ही सब काम ठीक तरह से संभाल लेंगे।
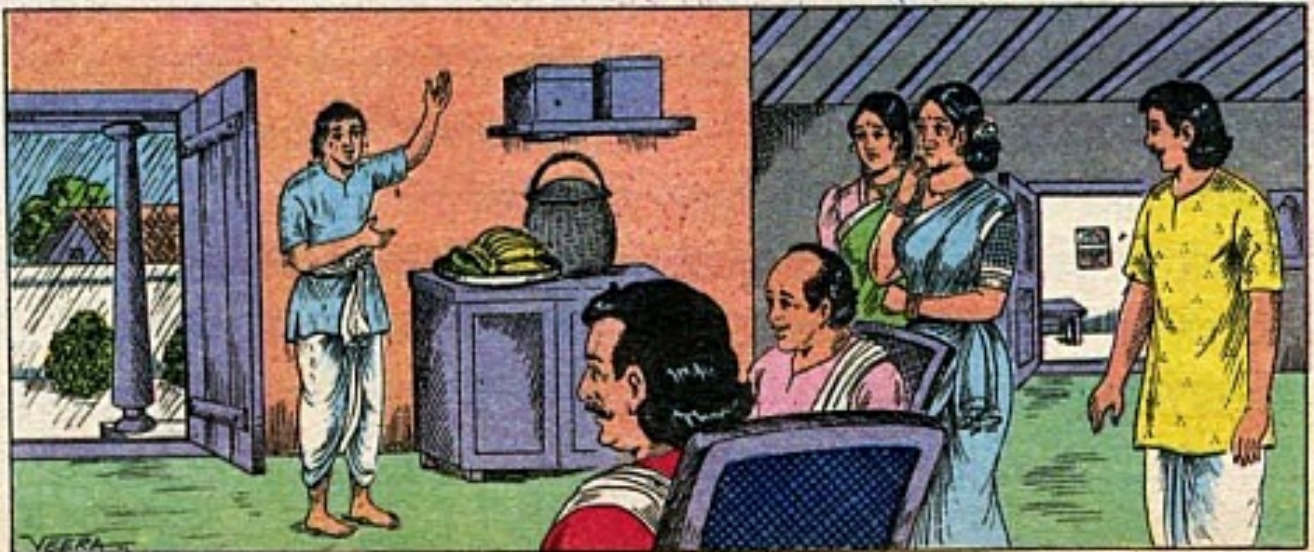
जिस ब्राह्मण परिवार ने उन्हें आश्रय दिया उनपर क्यों और कैसी विपत्ति आ पड़ी, यह जानने कुन्ती वहाँ आयी। तब वह दुखी ब्राह्मण रोता हुआ अपनी पत्नी और बच्चों से यों कहने लगा।

"इस संसार में पत्नी और संतान के साथ सुखी जीवन व्यतीत करने का मार्ग ही नहीं दीखता। मैंने तुमसे बहुत ही पहले कहा था कि इस गाँव को छोड़कर चले जाएँगे। पर तुमने नहीं माना। मेरी बात उसी समय मान जाती तो हम पर अब यह विपत्ति ना आती। हम इन मुश्किलों में नहीं फँसते। अब हम करेंगे भी क्या? तुममें से किसको मैं राक्षस के सुपुर्द करूँ? आज तक तुमने सुख-दुख में मेरा साथ दिया; संतान को जन्म देकर मेरे जीवन को सार्थक किया। तुम जैसी साध्वी को क्या मैं राक्षस को सौंप दूँ? अथवा उस पुत्र को भेजूँ, जो हमारा एकमात्र वंशज है, जिसे हम अपनी ममता लुटाकर पाल-पोसकर बड़ा कर रहे हैं। क्या उस पुत्री को भेजूँ, जिसके विवाह का उत्तरदायित्व मुझपर है? अब मेरी दृष्टि में एकमात्र मार्ग है। और वह है स्वयं राक्षस के अधीन हो जाऊँ। अलावा इसके, मुझे कोई मार्ग दिखायी नहीं देता।"

ब्राह्मण की पत्नी ने साफ़ इनकार करते हुए कहा "आपकी मृत्यु से मेरी और संतान की रक्षा करनेवाला कोई नहीं होगा। हम अनाथ हो जाएंगे। हम दूसरों के आदर के योग्य नहीं रह जाएंगे। मुझमें इतना सामर्थ्य भी नहीं कि मैं बच्चों की देखभाल कर सकूँ, उनके भविष्य को

सँवार सकूँ। अत: मैं राक्षस का आहार बनकर जाऊँगी। हाँ, मेरे बच जाने की भी आशा है। हो सकता है वह राक्षस मुझपर दया करे। एक अबला को अपना आहार बनाने में उसे संकोच हो। इसलिए मुझे ही राक्षस के पास जाने की अनुमति दीजिये।''

उसकी बातें सुनकर ब्राह्मण ने अपनी पत्नी को गले लगाया और दोनों बिलख-बिलख कर रोने लगे। पुत्री ने उन्हें रोकते हुए उनसे कहा ''आप दोनों क्यों अनावश्यक रो रहे हैं? मुझे राक्षस के पास भेजिये। आख़िर किसी ना किसी दिन मुझे आप लोगों से अलग होना ही पड़ेगा। मुझे भेजने से आप लोगों को कोई नष्ट भी नहीं पहुँचेगा। और आप सब इस ख़तरे से बच भी जाएँगे।''

उस समय पाँच साल का उनका बच्चा अपने हाथ में एक छोटी-सी छड़ी लिये बड़े उत्साह से इधर-उधर घूम रहा था। अपनी तुतली जबान में वह कहने लगा ''मैं इस छड़ी से राक्षस को मार डालूँगा। आप लोग यह रोना बंद कर दीजिये।'' उसकी बातों पर उस दुख में भी वे हँस पड़े।

कुन्ती उनकी दुख-भरी गाथा पास ही बैठी सुन रही थी। वह उनके और समीप आयी और बोली ''महाशय, कहिये तो सही कि आप पर ऐसी क्या विपदा आ पड़ी है। मुझे सविस्तार बतायेंगे तो मुझसे जो सहायता हो सके, करूँगी।''

ब्राह्मण ने कुन्ती से कहा ''देवी, आप दयालू हैं, इसलिए आप ऐसा कह रही हैं। हम पर जो आपदा आ पड़ी है, उसे दूर करना मानव-मात्र के लिए संभव नहीं है। इस नगर के समीप ही बकासुर नामक एक राक्षस है। वह नरभक्षक है। हर रोज़ वह मनुष्यों का मांस खाता है। वह बहुत ही बलवान है। चूँकि वह इस गाँव का रक्षक है, इसलिए उसकी शर्त है कि गाँववाले एक-एक घर से हर रोज़ बीस-बीस बोरों का चावल, दो भैंसें और एक मनुष्य को उसके आहार के रूप में भेजें। अगर किसी ने ऐसा करने में आनाकानी की, या किसी प्रकार की लापरवाही दिखायी तो वह गाँव पर टूट पड़ेगा और तरह-तरह से सतायेगा। इस देश का राजा नेत्रकीयगृह नामक स्थल पर रहता है। इस विपत्ति से जनता

को बचाने का कोई भी प्रयत्न वह नहीं करता। वह असमर्थ है, शक्तिहीन है। ऐसे असमर्थ तथा शक्तिहीनों के शासन-काल में जनता को दुख सहने ही पड़ते हैं। हर दिन उन्हें कोई-ना कोई यातना सहनी ही पड़ती है। आज हमारे घर की बारी आयी है। अगर हम राजा के आश्रय में रहते या धनवान होते तो किसी मनुष्य को खरीद लेते और उसे उस राक्षस का आहार बनाकर भेजते। आप तो देख ही रही हैं कि हमारी स्थिति कितनी दयनीय है। इस विपत्ति से बचने का कोई मार्ग भी नहीं है। हम एक-दूसरे को छोड़कर जीवित भी नहीं रह सकते। इसलिए हमारा निर्णय है कि हम सब इकट्ठे जाकर उस राक्षस का आहार बन जाएँ।"

तब कुन्ती ने कहा "महोदय, आप निश्चिंत रहिये। मेरा पुत्र राक्षस का आहार बनकर जायेगा। उसे राक्षस मार नहीं सकता। वही उस बलवान राक्षस को मार डालेगा। मेरा पुत्र महाबली है। अलावा इसके, उसके पास मंत्र-तंत्र की शक्तियाँ भी भरपूर हैं। इसीलिए मैं उसे भेजने का साहस कर रही हूँ। क्या कोई ऐसी माँ होगी, जो सौ पुत्रों के होते हुए भी उनमें से किसी को मृत्यु के मुँह में भेजे। जान-बूझकर अपने पुत्र की बलि दे दे? इसलिए मेरा कहा मानिये और मेरे इस प्रबंध को स्वीकार कीजिये। किन्तु, यह बात गाँववालों में से किसी को मालूम ना हो। उसके गुरुवर को यह बात मालूम हो जाए और वे इसके लिए अपनी स्वीकृति ना दें तो राक्षस के वध का अवकाश उसके हाथ से छूट जायेगा।"

कुन्ती की बातों पर ब्राह्मण को विश्वास हुआ। अपने और परिवार के बच जाने पर उसे अपार आनंद हुआ। कुन्ती के इस उपकार के लिए उसने अपनी कृतज्ञता व्यक्त की। कुन्ती ने भीम को सारा वृत्तांत बताया। भीम ने माता के इस प्रबंध पर हर्ष व्यक्त किया।

इतने में चारों पाँडव भिक्षा लेकर वापस लौटे। भीम को हर्षित पाकर धर्मराज ने माता कुन्ती से उसका कारण पूछा। कुन्ती ने उससे पूरी बात बतायी और कहा "इतने दिनों के बाद ब्राह्मण के परिवार को सहायता पहुँचाने का भाग्य हमें प्राप्त हुआ।"

कुन्ती की बातें सुनकर धर्मराज को बहुत दुख हुआ। उसने सोचा कि माँ ने निर्णय लेने में ज़ल्दबाजी की। उसे मालूम है कि पाँडवों की आशाओं का भविष्य भीम के भुजाबल पर ही निर्भर है। भविष्य में कौरवों पर विजय पाकर अपना राज्य वापस लेना हो तो भीम के बिना यह कैसे संभव होगा? दुर्योधन ने लाख-गृह में उन्हें बन्दी बनाकर सब को मौत के घाट उतारना चाहा तो उन सबको उस घोर विपत्ति से भीम ही ने तो बचाया। यह अभूतपूर्व कार्य केवल भीम से ही संभव हो पाया। इसलिए धर्मराज ने अपनी चिंता व्यक्त की। कुन्ती ने अपने निर्णय का समर्थन किया और कहा "इस विपत्ति में ब्राह्मण परिवार की सहायता ना करना घोर पाप होगा। भीम पर कोई विपदा नहीं आयेगी। उसके बारे में चिंतित होने की कोई आवश्यकता नहीं है। वह किसी भी राक्षस को मारने की शक्ति रखता है। मेरा निर्णय सदुद्देश्य से लिया गया निर्णय है। यह पुण्य का काम है, जो भविष्य में हमारी रक्षा करेगा।" धर्मराज को माँ की बातें ठीक जंचीं और उसने भीम को राक्षस के पास भेजने के लिए अपनी सम्मति दी।

दूसरे दिन सबेरे ही ब्राह्मण ने भीम को स्वादिष्ट और पौष्टिक आहार खिलाया। खाने के बाद उसने जाने की तैय्यारी की।

उसने दो भैंसों को एक गाड़ी में जोता। गाड़ी को अन्न से भर दिया। फिर नगर की दक्षिणी दिशा की ओर निकला जहाँ बकासुर रहता था। उसने बहुत दूरी पर यमुना नदी के किनारे गाड़ी

रोकी। वहाँ से बकासुर का नाम ले लेकर और उसे अपने पास आने के लिए ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा। वह उसकी प्रतीक्षा में चुप बैठ नहीं पाया। गाड़ी में जो आहार था, उसे खाने में जुट गया।

एक साधारण मानव उसका नाम ले लेकर बुलाये, यह बकासुर को पसंद नहीं आया। वह बहुत ही क्रोधित हुआ। दौड़ा-दौड़ा भीम के पास आया। उसने देखा कि उसके लिए एकचक्रपुर के लोगों के भेजे हुए आहार को बड़े मजे से एक मानव खाये जा रहा है। उसने पूछा "कौन हो तुम? मरनेवाले हो, फिर भी निश्चिंत हो खाये जा रहे हो?"

भीम बकासुर को देखकर हँस पड़ा और यथावत् खाने में निमग्न हो गया। बकासुर ने ज़ोर से चिल्लाया और दोनों हाथ उठाकर भीम पर पिल पड़ा, मानों उसे वह मारने जा रहा हो। भीम ने उसकी परवाह ही नहीं की। उसकी ओर देखा तक नहीं। वह खाने में ही लगा रहा। राक्षस को भीम की इस लापरवाही तथा निश्चिंतता पर आश्चर्य भी हुआ और क्रोध भी। उसने दोनों हाथों से भीम की पीठ को थपथपाया। भीम ने इसकी भी परवाह नहीं की। उसने खाना खाया और अपना हाथ-मुँह धोने नदी के किनारे गया। बकासुर के क्रोध का अंत ना रहा। उसने एक बड़े पेड़ को उखाड़ा और भीम पर फेंका। भीम ने पानी पिया और बकासुर से लड़ने के लिए सन्नद्ध होकर लौटा। बकासुर का फेंका हुआ वृक्ष भीम के हाथ में था। उसने एक और वृक्ष उखाड़ा और पुनः भीम पर फेंका। भीम ने अपने हाथ के वृक्ष को ढ़ाल बनाकर उसे रोक लिया। दोनों में तब तक वृक्षों से युद्ध होता रहा, जब तक पास कोई ही वृक्ष ही नहीं बचा। फिर बकासुर ने अपने हाथों से भीम को पकड़ लिया। दोनों में मल्ल-युद्ध होता रहा। दोनों एक दूसरे को दूर-दूर तक फेंकते रहे, एक-दूसरे को खींचते रहे। आख़िर भीम ने बकासुर को ज़मीन पर पटक दिया और उसकी छाती पर बैठ गया। उसे कसकर पकड़ लिया और उसे घुटनों से, हाथों से मारने लगा। उसकी गर्दन, कमर और पीठ को अपने घुटनों और हाथों से घायल करने लगा। बकासुर रक्त
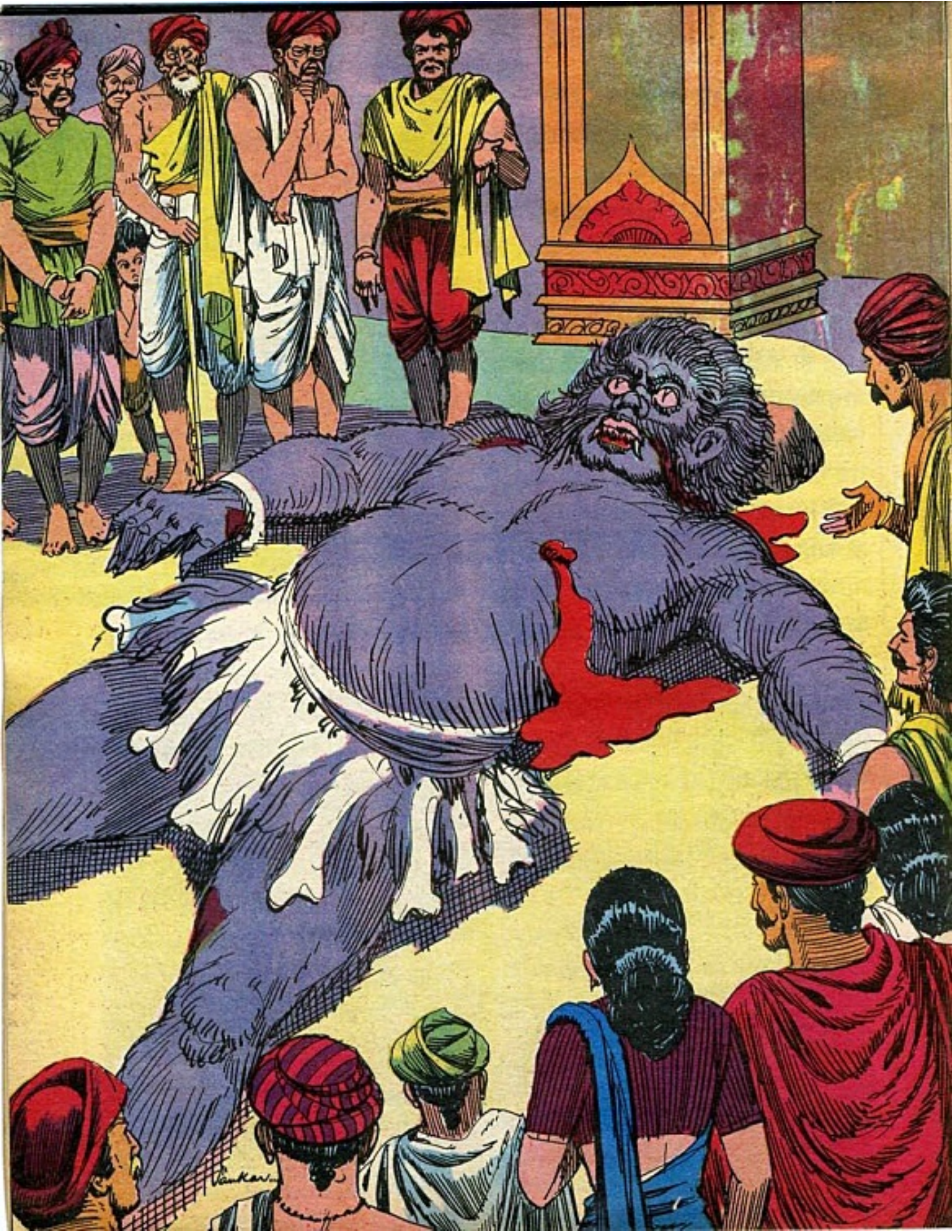
उगलता हुआ मर गया।

राक्षस की चिल्लाहट और हाहाकर सुनकर उसके सब बंधु दौड़े-दौड़े आये। भीम ने उन सब को चेतावनी दी "भविष्य में तुममें से किसी ने कभी भोजन के लिए मानवों को मारने की चेष्टा की, तो तुम लोगों की भी यही दुस्थिति होगी। सावधान।"

भय से काँपते हुए वे वहाँ से लौट गये।

भीम बकासुर का शव खींचता हुआ नगर के मुखद्वार पर ले आया। नदी में नहाकर घर लौटा और धर्मराज को पूरा विवरण सुनाया।

नगर के लोगों ने उस शव को देखा। राक्षस के मरने का समाचार नगर भर में फैला। उन्हें मालूम नहीं था कि किसके हाथों राक्षस का अंत हुआ है। उन्होंने उस पुण्यात्मा की भरपूर प्रशंसा की। उन्होंने अपने-अपने इष्ट देवताओं की पूजाएँ की। जब उन्हें मालूम हुआ कि उस दिन की बारी फ़लाने ब्राह्मण की थी, तो सब लोग उसके घर आये। उन्होंने ब्राह्मण से पूछा कि राक्षस को मारनेवाला कौन है ? ब्राह्मण को कुन्ती की बात याद आयी। उसने यह रहस्य नगरवासियों से छिपाना अपना कर्तव्य समझा, इसलिए उसने लोगों को बताया "आज हमारी बारी थी। मैं बहुत ही चिंतित था। मेरी मृत्यु निश्चित थी। तब एक सिद्ध पुरुष मेरे घर आये। उन्हें अपना दुखड़ा सुनाया। तक्षण ही वे राक्षस का आहार लेकर उसके पास गये। शायद उन्हीं पुण्यात्मा ने उसका वध किया होगा।"

एक दिन उस ब्राह्मण के घर एक ब्राह्मण आया। वह देश-भर में घूमता रहता था। उसने ब्राह्मण का आतिथ्य स्वीकार किया और अपनी यात्रा का वृत्तांत सविस्तार सुनाया। राजाओं और उनके कार्य-कलापों के बारे में उसने बहुत कुछ सुनाया। बातों में उसने पाँचाल देश के राजा द्रुपद के बारे में भी बताया।

उसने कहा कि शिखंडी, धृष्टद्युम्न तथा द्रौपदी उसकी संतान है। द्रौपदी के स्वयंवर के प्रबंधों का भी संक्षेप में विवरण दिया। कुन्ती और पाँडवों ने भी सविस्तार उन विवरणों को जानना चाहा। तब वह ब्राह्मण यों बताने लगा।

- सशेष

एकता

पड़ोस के ही गाँव में रहनेवाले अपने मित्र रामेश से मिलने जगदीश अपने गाँव से निकला। बीच रास्ते में लगी एक हाट में उसने दो चित्र खरीदे। उनमें से एक था शिव का और दूसरा विष्णु का।

मित्र के घर पहुँचते ही जगदीश ने कहा "अरे रामेश, देखो, तुम्हें भेंट देने क्या ले आया हूँ" कहते हुए दोनों चित्र उसने उसे दिये।

रामेश ने बहुत ही खुश होते हुए उन्हें लिया। खिड़की में रखी दो कीलें लीं और अपने दस साल के बेटे सतीश से कहा " अरे सतीश, बग़ल के घर में जा और हथौड़ा ले आ। दीवार में चित्र लटकायेंगे।"

सतीश गया, किन्तु जल्दी ही कहते हुए वापस आया कि उनके यहाँ हथौड़ा नहीं है।

रामेश ने कहा "तो ऐसा कर। सामने के नारायण के घर जा और उनसे पूछकर ले आ।"

सतीश फिर से ख़ाली हाथ लौट आया। उनके यहाँ भी हथौड़ा नहीं है। रामेश ने अपनी हार नहीं मानी। उसने अपने बेटे को दो तीन घर और भेजा। लेकिन सभी ने यही कहा कि हमारे यहाँ हथौड़ा नहीं है।

रामेश एकदम नाराज़ हो उठा और जगदीश से बोला "देखी तुमनें हमारे गाँववालों की नीयत। जिस - जिसके घर में मैंने हथौड़े के लिए भेजा, उन सभी के घरों में हथौड़ा होगा। किन्तु वे नहीं देंगे। ऐसे लोग जहाँ हों, वहाँ एकता कैसी होगी ?"

जगदीश सिर हिलाकर चुप रह गया। तब रामेश ने अपने बेटे से कहा "हथौडा देने कोई तैय्यार नहीं तो कर भी क्या सकते हैं। कमरे में काठ की बनी उस बंडी संदूक में हथौड़ा है। उसे ला।" यह सुनकर जगदीश का चेहरा फीका पड़ गया।

कस्तूरी

बरगद का पेड़

कह सकते हैं, हमारे देश में ऐसा कोई गाँव नहीं होगा, जहाँ बरगद का पेड़ ना हो। गाँव के बाहर दिखायी देनेवाले इस पेड़ की छाँव में आदमी और पशु अपनी थकान दूर करते हैं। टहनियों से निकलनेवाली जड़ें जटाओं की तरह लटकती रहती हैं। पर्शियिन सिंधुशाखा के यहाँ जो विशाल बरगद का पेड़ है, उसके तले हमारे यहाँ से गये हुए व्यापारी बहुत दिनों तक ठहरते थे। वहाँ वे विश्राम लेते थे। इसीलिए पर्शियन भाषा में इस वृक्ष का नाम पड़ा 'वानियन'। हिन्दी में इसे 'बरगद' 'वट', मराठी में 'वार', तमिल में 'अल' मलयालम में 'पेरल' और तेलुगु में 'मर्रि' कहते हैं। अंग्रेज़ी में इसे 'इंडियन फिन' कहते हैं।

पूर्वकाल में संतानहीन दंपति ज्येष्ठ मास में अमावास्या के दिन वट वृक्ष की पूजा करते थे। कहते हैं कि अपने पति सत्यवंत के प्राणों की रक्षा के लिए सती सावित्री ने वट वृक्ष की पूजा की थी। सृष्टि के अंत में जब जलप्रलय होगा, तब पानी पर डोलते हुए वटवृक्ष के पत्ते पर महाविष्णु शिशु की तरह लेटेंगे, ऐसा भक्तों का विश्वास है। वट के पत्तों पर लेटे हुए बालकृष्ण के चित्रों की खूब बिक्री होती है।

कलकत्ता के समीप के शिबपूर बोटानिकल गार्डन का वट-वृक्ष, मद्रास के अड़यार के थियोसफिकल सोसाइटी के प्रांगण में स्थित वट वृक्ष तथा बिहार राज्य गोपीपुर का छतरी की तरह दीखनेवाला विशाल वटवृक्ष सुप्रसिद्ध हैं। इसी राज्य के तीन एकडों में व्याप्त वट वृक्ष भी बहुत ही प्रसिद्ध है।

बरगद के पेड़ के पत्ते अंडाकार में बड़े और मोटे होते हैं। फरवरी और मार्च महीने में इसमें अंकुर फूटते हैं। छोटे-छोटे फल बड़े होने पर जब फलते हैं तब इन्हें खाने नाना प्रकार के पक्षी इनसे आकर्षित होते हैं।

वटवृक्ष शताब्दियों तक जीवित रहता है।

हमारे देश के ऋषि : ३

नारद

भगवान व भगवान की सृष्टि को, बहुत ही चाहनेवालों में से थे ऋषिपुंगव नारद। वे ब्रह्मा के पुत्र थे। महाविष्णु के भक्त थे। महति नामक अपनी वीणा को झंकृत करते हुए सदा नारायण नाम का गान करते रहते थे ये ऋषिश्रेष्ठ नारद।

मनुष्य के सद्व्यवहार के समर्थकों में ये अग्रगण्य थे। विष्णु से इन्होंने जो विद्या पायी, उसे सुयोग्य मानवों को बोधनं करते थे। नारायण नाम का गान करते हुए त्रिलोकों में ये संचार करते थे और यथाशक्ति उपकार करते थे।

वाल्मीकी ने नारद से पूछा कि मानवों में सबसे उत्तम चरित्रवाला व्यक्ति कौन है तो नारद ने श्री राम का नाम लिया और उनके बारे में सविस्तार बताया। उनसे प्रेरित वाल्मीकी ने तमसा नदी के तट पर बैठकर रामायण महाकाव्य की रचना की।

पाँडवों ने जब एक नूतन नगर के निर्माण का निश्चय किया तब नारद ने दिव्य नगर इंद्रपुरी, कुंबेरपुरी आदि सुव्यवस्थित तथा सुँदर नगरों का वर्णन किया। उनका वर्णन इतनी मनमोहक शैली में नारद ने किया, मानों वे आँखों के सामने हैं। पाँडवों ने अपनी राजधानी इंद्रप्रस्थ का निर्माण भी इन्ही नगरों की तरह किया।

कहा जाता है कि नारद कलहप्रिय हैं। किन्तु यह एक अपवाद मात्र है। नारद बाहर से कलहप्रिय लगते हैं, परंतु उनका लक्ष्य लोक-कल्याण ही था। बुराई को अच्छाई जीते, अधर्म को धर्म जीते, यही उनका लक्ष्य था। इन्हीं कार्योंमें परस्पर लड़ाई कराने की उनकी प्रवृत्ति ने सहायता पहुँचायी। उदाहरणस्वरूप कंस की ही बात लें। वह जानता नहीं था कि बालकृष्ण कहाँ पल रहा है। यह रहस्य जानने के लिए कंस छटपटा रहा था। नारद के उसे यह रहस्य बता दिया। कंस ने बालकृष्ण को मार डालने की ठानी और स्वयं बालकृष्ण के हाथों मर गया। कंस के अत्याचारों से पीड़ित भूमाता ने ठंड़ी सांस ली। यों नारद के कलहप्रेम ने ही कंस का अंत करवाया।

एक प्रकार से रावण के मरण के कारक भी नारद ही थे। एक बार रावण ने नारद से पूछा कि ओंकार का अर्थ क्या है ? नारद को लगा कि रावण उसे जानने की योग्यता नहीं रखता, तो उन्होंने बताने से इनकार कर दिया। रावण अति क्रोधित हुआ। उसने नारद की जीभ काटनी चाही। तब नारद ने रावण को शाप दिया कि निकट भविष्य में तुम्हारे दसों सिर कट जाएँगे।

नारद में ज्ञान की पिपा सा अधिक थी। उन्होंने

एक दिन महाविष्णु से पूछा "विश्व की सृष्टि का आधार माया कही जाती है, यह माया है क्या?" विष्णु ने नारद से कहा कि भविष्य में तुम्हीं यह जान जाओगे।

एक दिन नारद यथाप्रकार भूलोक में संचार कर रहे थे। एक गाँव से जब वे गुज़र रहे थे, तब अकस्मात् भारी वर्षा होने लगी। वर्षा से अपनी रक्षा के लिए उन्होंने एक दरवाज़ा खटखटाया। एक सुँदर युवती ने दरवाज़ा खोला। उस युवती के माँ-बाप की प्रार्थना पर उन्होंने उससे विवाह कर लिया और वहीं रह गये। उनकी संतान भी हुई। सांसारिक जीवन के सब प्रकार के सुख-दुखों का अनुभव किया। एक दिन हठात् नदी में बाढ़ आयी और उस बाढ़ के प्रवाह में उनकी पत्नी और बच्चे बह गये। नारद से उनके बिछोह का दुख सहा नहीं गया। वे भूमि पर लोटते रहे और रोते रहे। कहते रहे कि मेरी पत्नी और बच्चे बह गये हैं। अब मेरा क्या होगा? उनके बिना मैं कैसे रह सकूँगा? विलाप करते हुए चिल्लाने लगे "नारायण, मेरी रक्षा करो।"

दूसरे ही क्षण नारायण प्रत्यक्ष हुए और नारद से पूछा "तुम तो त्रिलोक संचारी हो। पत्नी और बच्चे कहाँ से आ गये? उनके बिछोह पर इतना दुखी क्यों हो रहे हो?"

नारद की समझ में आ गया कि इसी को माया कहते हैं। नारद ने दोनों हाथ उठाकर विष्णु को प्रणाम किया और उनकी स्तुति की।

सावित्री और उसके पिता अश्वपति से नारद ने ही कहा था कि विवाह के एक वर्ष के ही अंदर सत्यवंत मर जायेगा। नारद के कहने के कारण ही सावित्री ने यम का डटकर सामना किया और अपने पति को बचा लिया। सावित्री के मनोबल की वृद्धि नारद के ही कारण हुई।

इस प्रकार हमारी कितनी ही पुराण-गाथाओं से नारद का संबंध है। हमारे भक्ति-साहित्य में नारद के भक्ति - सूत्रों का समुन्नत स्थान है।

क्या तुम जानते हो?

१. संसार का कौन-सा वह देश है, जहाँ तेल की अधिक उत्पत्ति होती है ?
२. 'इंडियन शेक्सपियर' के नाम से प्रख्यात नाटककार कौन है ?
३. ग्रीनलाण्ड किस देश का भाग है ?
४. टिबेट में जल लेकर, हिमालयों से बहती हुई, समुद्र में मिलजाने के पहले गंगा में मिलनेवाली नदी कौन - सी है ?
५. घास की जाति का बहुत ही बड़ा पौधा कौन-सा है ?
६. हमारे देश के किस नगर को 'सात द्वीपों का नगर' कहते हैं ?
७. रेडियो के आविष्कारक कौन हैं ?
८. 'रामचरित मानस' के रचयिता कौन हैं ?
९. किसको 'आर्थिक शास्त्र के पिता' कहते हैं ?
१०. अकबर से किस राजपूत युवरानी ने विवाह किया ?
११. मलेरिया को दूर करने के लिए उपयोग में लाया जानेवाला 'क्विनैन' किस पेड़ की छाल से निकालते हैं ?
१२. दक्षिण भारत में स्थित एक नगर में ''ब्रिटिश आर्मी प्रधान कार्यालय'' था, उस नगर का क्या नाम है ?
१३. इंडोनेशिया का एक द्वीप है सुपत्रा। इसका प्रसिद्ध स्थानीय नाम क्या है ?
१४. क्रिकेट टेस्टमाच में भाग लेनेवालों में सबसे अधिक उम्रवाले कौन हैं ?
१५. १४८२ में केप आफ गुडहाउस के द्वारा भारत का मार्ग किसने ढूँढा ?
१६. 'रामायण' में लक्ष्मण की पत्नी का क्या नाम है ?
१७. 'बर्लिन' किस नदी-तट पर है ?
१८. दुनिया का सर्वप्रथम अन्वेषक ईजप्ट-वासी था। उसका क्या नाम है ?

उत्तर

१. रूस
२. कालिदास
३. डेन्मार्क
४. ब्रह्मपुत्र
५. बाँस
६. बंबई
७. बी.मार्कोनी
८. तुलसीदास
९. आडम स्मित
१०. जोधाबाई
११. सिंकोना
१२. बंगलोर
१३. जावा मैनर
१४. इंग्लैड का डब्ल्यू रोड्स (५२ साल)
१५. वास्को डी गामा
१६. उर्मिला
१७. स्प्री नदी
१८. हेन्ना

व्याकुल भरत

भरत बहुत ही अच्छा आदमी था। अड़ोस-पड़ोस के लोगों की सहायता करने में उसे बड़ा आनंद आता था। उसने कितने ही लोगों की सहायता की, उनके काम आया, किन्तु वे लोग उससे तृप्त नहीं थे। उसके साथ अच्छा व्यवहार नहीं करते थे। इसी कारण भरत हमेशा व्याकुल रहता था।

भरत की पत्नी वाणी अच्छे स्वभाव की थी। पति का इस प्रकार चिंतित रहना उससे सहा नहीं गया। उसने भरत से कहा "दूसरों की मदद से जो आनंद तुम्हें प्राप्त होता है, इससे ज़्यादा चिंता तुम्हें खाये जा रही है। आगे से अपनी ही बात सोचो, अपनी ही ज़िन्दगी गुज़ारो, दूसरों के बारे में सोचना छोड़ दो।" यह बात वह उससे अक़्सर कहा करती थी।

पत्नी की ये बातें सुन-सुनकर भरत ने भी निर्णय कर लिया कि वह दूसरों की सहायता नहीं करेगा। उनके बारे में सोचेगा तक नहीं।

शिव, भरत के सामने के घर में रहता था। गाँव छोड़कर जब वह शहर जाने लगा तो उसने घर को बेचने की जिम्मेदारी भरत को सौंपी।

तब भरत ने उससे कहा "मैं जिस किसी की भी सहायता करता हूँ, उससे मेरा झगड़ा हो जाता है। तुम तो गाँव छोड़कर जा रहे हो। मैं नहीं चाहता कि हम दोनों के बीच कोई मन-मुटाव हो। मेरी बात मानो और किसी और को यह जिम्मेदारी सौंपो।"

शिव हँसता हुआ बोला "ठीक है। मैं ताला लगाके जा रहा हूँ। मैं जानता हूँ कि तुम कितने अच्छे हो। इसलिए तुम्हें ग़लत समझने का सवाल ही नहीं उठता। कोई घर खरीदने के लिए आ जाए तो उसे मेरा पता दे देना और एक पत्र भी। मैं खुद बेचूँगा। किन्तु मैं उसी आदमी को यह घर बेचूँगा, जो तुमसे पत्र ले आये।" कहकर वह शहर चला गया।

भरत का साला भीम अपना गाँव छोडकर

और कहा "तुम मेरी पत्नी के सगे भाई हो। मेरा घर इतना बड़ा है कि चार परिवार यहाँ एक साथ रह सकते हैं। तुम्हें अलग रहने की क्या ज़रूरत है ? मैं थोड़े ही तुम्हें अलग रहने दूँगा। मेरे ही घर में मेरे ही साथ रहो।"

अपने बहनोई के स्वभाव से वह अच्छी तरह परिचित था। बहनोई के रवैय्ये पर बहुत ही नाराज़ हुआ। उसने गाँव बदलने का इरादा भी छोड़ दिया।

एक दिन गोपी नामक एक आदमी भरत के पास आया और कहा "आप जानते ही हैं कि मैं ग़रीब हूँ। घर खरीदने के लिए मेरे पास पूरी रक़म नहीं है। एक ही किश्त में इतनी बड़ी रक़म देने की शक्ति भी नहीं रखता। मुझे मालूम हुआ है कि जिसे आप पत्र लिखकर देंगे, उसी को शिव घर बेचेगा। आप मुझपर दया कीजिये। मैं जीवन-भर आपका ऋणी रहूँगा।"

इस गाँव में रहने के लिए आना चाहता था। वह शिव का घर खरीद लेना चाहता था। लेकिन भरत ने भीम को पत्र लिखकर नहीं दिया। उसे ड़र था कि अपने लोगों की सिफ़ारिश करूँ तो शिव उसे ग़लत समझेगा।

भीम ने कहा "बहनाईजी, ऐसा घर कहीं नहीं मिलेगा। मैं इस सुवर्ण अवसर को अपने हाथ से जाने देना नहीं चाहता। अलावा इसके, मैं यह घर ख़रीद लूँ तो दोनों आमने-सामने रह सकते हैं। तुम पत्र दोगे तो मैं शहर चला जाऊँगा। वह जितनी क़ीमत माँगे, दे दूँगा और घर खरीद लूँगा, बस मेरी इतनी छोटी-सी सहायता कर देना"।

भरत ने पत्र लिखकर देने से इनकार किया

अगर कोई रक़म चुकाकर घर खरीद ले तो उसकी बात अलग है। परंतु यह गोपी तो किश्तों में घर खरीदना चाहता है। इसलिए भरत ने सोचा कि मैं सिफ़ारिश करूँ तो इसकी मदद भी हो जायेगी। इसी उधेडबुन में वह पड़ा रहा कि क्या करूँ? गोपी यह कहकर चला गया कि फिर आऊँगा।

थोड़ी देर बाद गोपी की पत्नी रुक्मिणी आयी। वह भरत की पत्नी वाणी से मिली और कहा "मेरे पति को दिल की बीमारी है। घर खरीदने को बहुत ही लालायित है। इसी चिंता

में हमेशा खोया रहता है। वैद्य ने भी कहा है कि अपना घर हो तो बीमारी भी दूर हो सकती है। मुझे हमेशा चिंता लगी रहती है कि किस पल में क्या हो जायेगा। तुम्हारा पति हमारी मदद करेगा तो हमारा अपना एक घर होगा। सुख की साँस हम ले पायेंगे। मेरे पति के प्राण, तुम्हारे पति के हाथों में हैं।''

वाणी का हृदय दया से पसीज उठा। उसने अपने पति से आग्रह किया कि वह शिव को पत्र लिखे। भरत ने गोपी को पत्र लिखकर दिया। गोपी दो दिनों के बाद शहर से लौटकर भरत से मिला और कहा ''तुम तो अच्छे आदमी हो, पर तुम्हारा दोस्त पैसों के पीछे पागल है। उसकी ज़िद है कि पूरी रक़म दो ही किश्तों में चुका दी जाए। उसकी बातों में एकदम कड़ुवापन था। वह मेरे साथ बुरी तरह से भी पेश आया। किराये के घर में ही ना सही, पेड़ के नीचे ही सही, मैं मर जाऊँगा, पर किसी भी हालत में उस घर को नहीं खरीदूँगा। मैंने उससे यह बात कह भी दी।''

गोपी दिल का बीमार था, इसलिए भरत को उसकी बड़ी चिंता थी। उसनें गोपी को समझाने की कोशिश की कि अच्छा घर है, हाथ से जाने मत देना। उसने यह कहकर गोपी को डराया भी कि तुमने अगर नहीं खरीदा तो मेरा साला और ज़्यादा रक़म देकर खरीदने के लिए तैयार है।

गोपी पर इस धमकी का असर हुआ। भरत ने फिर से शिव को एक पत्र लिखकर गोपी की

परिस्थिति समझायी और ज़ोर दिया कि घर उसे ही दे। गोपी उस पत्र को लेकर शहर गया। फिर क्या हुआ, भरत को उसने बताया ही नहीं। कुछ दिनों के बाद गाँव में सुनने आया कि गोपी ने शिव का घर खरीद लिया।

भरत की समझ में नहीं आया कि क्यों गोपी ने इस बात को गुप्त ही रखा। उसके पास क्यों नहीं आया और घर खरीदने की बात उससे क्यों नहीं कही। वह जानने को आतुर था कि आखिर हुआ क्या? पूरा ब्योरा जानने के लिए उसने गोपी और उसके परिवार को एक दिन अपने यहाँ भोजन के लिए बुलाया। वे आये और खाना भी खाया, लेकिन घर के बारे में एक भी बात नहीं की। भरत को मन मसोसकर चुप

ज़रूरत पूरी हो जाए तो हमसे बात भी नहीं करते। ऐसे विश्वासघातियों से कैसे पेश आना है, उन्हें कैसी सबक सिखानी है, मेरा भाई बखूबी जानता है। थोड़े दिनों के लिए हम उसे अपने घर में रहने देंगे।''

भरत ने मान लिया। पति-पत्नी के बुलावे पर भीम परिवार सहित उनके घर में आकर रहने लगा। घर की जिम्मेदारियाँ स्वयं संभालने लगा। उसी की निगरानी में सब काम होने लगे। एक दिन गोपी उनके घर आया। भीम ने दरवाज़े पर ही उसे रोक लिया और आने की वजह पूछी। गोपी ने कहा कि कल ही गृह-प्रवेश है, भरत को न्योता देने आया हूँ।

रहना पड़ा।

यह सच है कि गोपी ने घर खरीद लिया। अब गृहप्रवेश की तैयारियाँ भी जोर-शोर से हो रही थीं। भरत की चिंता तीव्र हो गयी। तब उसकी पत्नी वाणी ने कहा ''इस बार आपको प्रोत्साहित करने का उत्तरदायित्व मुझपर है। मैं अपनी ग़लती मानती हूँ। मेरे ही कारण आप दुखी हैं। मैं जान गयी कि हम बेवकूफ़ हैं, नासमझ हैं। इसीलिए वे ही हमें दुख दे रहे हैं, जिनकी सहायता हमने की है। हमसे सहायता पाकर हमीं को वे शत्रु समझ रहे हैं। इस रोग की क्या दवा है, हम तो नहीं जानते, पर मेरा भाई भीम जानता है। ज़रूरत पड़ने पर हमारे आगे-पीछे घूमते हैं, हमारे तलुवे चाटते हैं, और अपनी

''बहनोई की तबीयत ठीक नहीं है। मैं उनसे तुम्हारी बात कह दूँगा'' भीम ने कहा। गोपी चला गया।

दूसरे दिन भरत के घर के सामने के घर में गृह-प्रवेश उत्सव बड़े पैमाने पर हुआ। गाँव के बहुत-से लोग आये। भरत के घर का कोई भी आदमी वहाँ नहीं गया। इस बात को लेकर बहुत टीका-टिप्पणियाँ हुईं। दूसरे दिन गली से गुजरते हुए भीम से किसी आदमी ने पूछा कि भरत गृह-प्रवेश के उत्सव पर क्यों नहीं आया तो भीम ने कहा ''गोपी ने मेरे बहनोई को बुलाया नहीं।''

उधर ही से गुज़रते हुए गोपी ने भीम की यह बात सुन ली और ज़ोर से चिल्ला पड़ा

"झूठ। मैं बुलाने तुम्हारे घर आया तो तुम्हीं ने तो कहा था कि बहनोई की तबीयत ठीक नहीं है। तुमने कहा भी था कि बहनोई को मैं बता दूँगा।"

"मैंने कहा ज़रूर कि बहनोई की तबीयत ठीक नहीं है। किन्तु मैंने सोचा कि तुम अंदर आओगे और बहनोई से उनकी हालत पूछोगे। तुमने तो ऐसा नहीं किया। वापस चले गये। इसलिए मुझे लगा कि तुम मेरे बहनोई के श्रेयोभिलाषी नहीं हो। उनकी उपस्थिति आवश्यक समझ नहीं रहे हो। इसी कारण मैंने उनसे बताया नहीं। उनकी तबीयत तो दूसरे दिन भी ख़राब ही थी।" भीम ने कहा।

"अपने बहनोई के बदले तुम तो आ सकते थे।" गोपी ने पूछा। भीम ज़ोर से हँसता हुआ बोला "तुम तो बहनोई को न्योता देने आये थे। मुझे थोड़े ही बुलाने आये? तुमने मेरी बात ही भुला दी। बिन बुलाये मैं कैसे और क्यों आऊँगा? क्या मुझे किसी पागल कुत्ते ने काटा है?"

गोपी के पास कोई उत्तर नहीं था। सिर झुकाकर वह चुपचाप वहाँ से चला गया।

घर लौटने के बाद भीम ने भरत को पूरी बात सुनायी। भरत व्याकुल हो बोला "क्यों व्यर्थ उसके पीछे पड़ गये। उसने ग़लती कर दी, तो वही उसका फल भोगेगा।"

भीम ने कहा "मैं भला उसके पीछे क्यों पड़ूँ? मेरा और उसका रिश्ता ही क्या? दोस्तों की मदद करनी चाहिये तक़लीफ़ों में। सुखों में साथ-साथ रहना चाहिये। शत्रुओं को दूर रखना चाहिये। गोपी ना ही हमारा दोस्त है ना ही दुश्मन। उसके बारे में सोचना भी बेकार है। कहीं मिल जाएं तो बातें कर लेंगे, मदद माँगे तो हो सके तो करेंगे। उसके बाद तो उसकी बात ही भुला देनी चाहिये। अक़्लमंद यही करते हैं और मैंने भी यही किया।"

भरत को अपनी कमी का एहसास हुआ। वह जान गया कि उन सबको उसने अपना समझा, जो उसके पास मदद के लिए आये थे। हमेशा उनके सुख-दुख में भगीदार होने के लिए आगे आया और वे ही उसकी चिंता के कारण बन गये। उसने सोचा कि आगे से भीम के कहे अनुसार रहूँ तो चिंताओं से दूर रहूँगा।

सियार और खरगोश

जंगल के सब जानवरों ने निर्णय लिया कि बंजर ज़मीन में हल चलाएँगे और खेती-बाड़ी करेंगे। एक दिन और जानवरों के साथ सियार व खरगोश भी कुदाल और फावड़े लेकर काम में लग गये।

तेज़ धूप थी। खरगोश थोड़ी ही देर में थक गया। पसीने से भीग गया। पर विश्राम लेने से वह ड़र रहा था, क्योंकि उसे भय था कि विश्राम करने से बाक़ी जंतु उसे कोसेंगे। शायद वे उससे कहें कि हम सब काम पर लगे हैं और तुम आराम कर रहे हो? मेहनत करना नहीं चाहते और सिर्फ़ फल भोगना चाहते हो? इसलिए लड़खड़ाते हुए उसने और थोड़ी देर तक बाक़ी जंतुओं के साथ काम किया।

किन्तु उससे काम नहीं हो पाया। वह बिल्कुल ही थक गया। किसी पेड़ के नीचे आराम ना करे तो शायद उसकी जान भी चली जाए। अपने बचाव के लिए उसने एक उपाय निकाला। उसने नाटक किया कि मानों पैर में कोई काँटा चुभ गया हो और बहुत ही दर्द हो रहा हो। इस बहाने धीरे से वहाँ से खिसक गया। थोड़ी देर वहीं रुका रहा। जब उसने देखा कि सब अपने-अपने कामों में लगे हुए हैं तो झुरमुटों के बीच में से भागता हुआ कुएँ के पास आया।

वह कुआँ एक पेड़ के नीचे था। उसपर एक घिरनी थी। घिरनी में एक लंबी रस्सी लडक रही थी। उसके दोनों कोनों में दो बाल्टियाँ थीं।

कुएँ और छाँव को देखकर खरगोश की जान में जान आयी। एक छलांग मारी और बाल्टी में बैठ गया। दूसरे ही क्षण वज़न के कारण बाल्टी कुएँ में गिरने लगी। खरगोश भय से काँप उठा। उसने सोचा, जो होना है, होगा। वह बिना हिले-डुले बाल्टी में बैठा रहा। पानी को छूते ही बाल्टी रुक गयी। खरगोश घबरा जाता और इधर-उधर डोलता तो अवश्य ही पानी में डूब जाता।

सियार खरगोश की चालों को चौकन्ना होकर

पचीस वर्ष पूर्व 'चन्दामामा' में प्रकाशित कहानी

ग़ौर से देख रहा था। जब उसने देखा कि बहाना बनाकर खरगोश वहाँ से खिसक गया है, तो वह भी चुपचाप वहाँ से चला गया। वह खरगोश के पीछ-पीछे आया। दूर से उसने देख लिया कि खरगोश बाल्टी में बैठा है और कुएँ के अंदर चला गया है। उसने सोचा "खरगोश ने अवश्य ही कोई उपाय सोचा होगा, नहीं तो वह इतनी देर तक कुएँ में बैठा नहीं होता। शायद खाने की कोई चीज़ छिपायी होगी।" वह धीरे-से कुएँ के पास आया और झुककर देखने लगा।

चूँकि कुआँ गहरा था, इसलिए उसे कुछ भी दिखायी नहीं पड़ा। उसे मालूम नहीं हो पाया कि खरगोश नीचे क्या कर रहा है। वह जानने को बहुत ही उत्सुक था कि आख़िर खरगोश कर क्या रहा है ?

उसने मीठे स्वर में पुकारा "बहनोई खरगोश।" "कौन हो? अच्छा मित्र सियार, क्या बात है?" खरगोश ने भी बड़े प्यार से पूछा। खरगोश जानता था कि सियार चतुर है। किसी मतलब से ही वह यहाँ आया होगा। इसलिए उसने अपनी बात बिल्कुल नहीं बतायी। उसने नाटक किया मानों अंदर वह बहुत ही व्यस्त हो।

"वहाँ बैठे-बैठे क्या कर रहे हो?" सियार ने सवाल किया। "मछलियाँ पकड़ रहा हूँ। यहाँ बेशुमार मछलियाँ हैं। तुम्हें भी चाहिये तो उस बाल्टी में बैठकर नीचे आ जा।" खरगोश ने जवाब दिया।

ऊपर की बाल्टी में सियार एकदम कूद पड़ा। खरगोश से सियार भारी था, इसलिए सियार की बाल्टी नीचे आने लगी और खरगोश की बाल्टी ऊपर।

बीच के रास्ते में जब दोनों बालटियाँ एक दूसरे से टकरायीं तब खरगोश ने कहा "तुम मछलियाँ पकड़ते रहो। मैं अभी आया।"

खरगोश जल्दी ही ऊपर आ गया। ऊपर आते ही वह कूद पड़ा और घर की तरफ़ दौड़ पड़ा।

उस दिन का काम पूरा करके जब जंतु कुएँ के पास हाथ-मुँह धोने आये तो उन्होंने देखा कि सियार कुएँ में बैठा चिल्ला रहा है। उन्होंने उसे ऊपर खींच लिया, तब जाकर सियार ने ठंडी साँस ली। वह खरगोश की चाल को समझ गया।
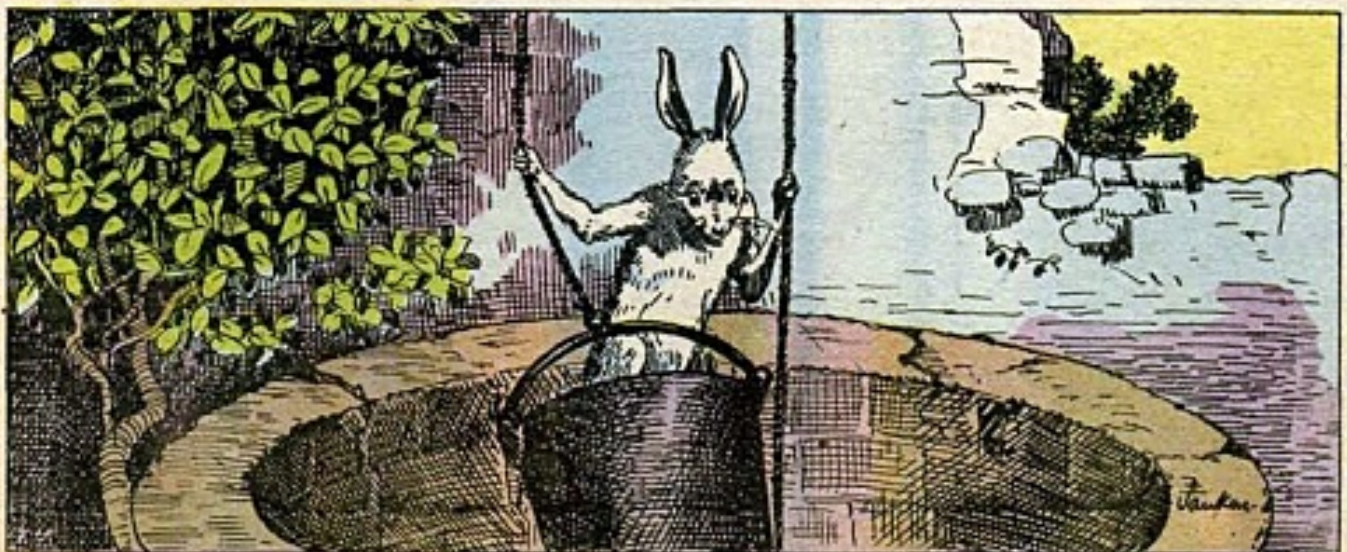
Say "Hello" to text books and friends
'Cause School days are here again
Have a great year and all the best
From Wobbit, Coon and the rest!

SUPER RUBBER
It's time to go back to school again. Time for text books. Time for games. Time to meet old friends. And make new ones. Time to start studying again. Because there's so much to learn about the world around you.
From all of us here at Chandamama, have a great year in school. And remember to tell us what you've learnt everyday, when you come home from school !
THE
CHANDAMAMA
COLLECTION
ARTIG1246

फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार १००)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ, अगस्त, १९९५ के अंक में प्रकाशित की जाएँगी।

Mahantesh C. Morabad

Mahantesh C. Morabad

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ★ १० जून, '९५ तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए। ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) रु. १००/- का पुरस्कार दिया जायेगा। ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर इस पते पर भेजें।

चन्दामामा, चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६.

अप्रैल, १९९५, की प्रतियोगिता के परिणाम

पहला फोटो : **पूज रहा हूँ उनका नाम**

दूसरा फोटो : **मंदिर में बैठे जो भगवान**

प्रेषक : **श्रीमती प्रमीला पवार**

ताप्ती वार्ड, स्टेशन रोड, टेलिफोन एक्सचेंज के पास, मुलताई, बैतूल जिला, मध्यप्रदेश - ४६०६६१.

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.
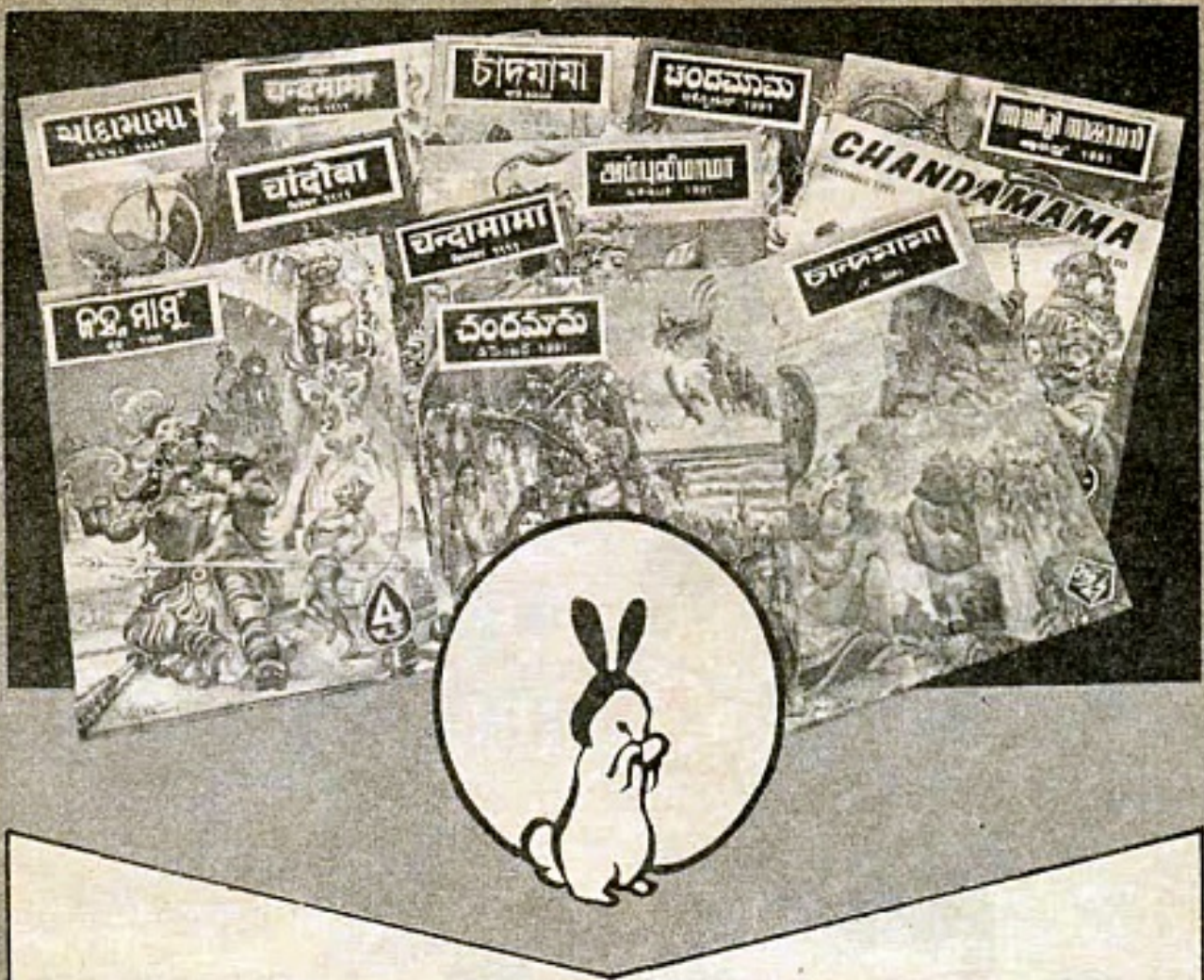
शाम का वक्त था. सोनू स्कूल से घर लौट रहा था. अचानक तेज हवा चलने लगी...
और एक उड़न-तश्तरी आसमान से उतरी और ठीक सोनू के पास आकर रुक गई...